खबर पेज 8 पर

MOHTA Publishing House

गंभीर समाचार

समय-समाज-संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष -11 अंक-10 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, शुक्रवार 1 - 15 अगस्त 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata

22 लाख प्रवासी वापस लौटें : ममता

- दूसरे राज्यों में प्रवासी कामगारों पर लगातार लग रहे अत्याचार के आरोप
- बंगाली उत्पीड़न रोकने के लिए सीएम ने उठाया एक बड़ा कदम

निज संवाददाता : दूसरे राज्यों में बंगाली प्रवासी कामगारों पर लगातार अत्याचार के आरोप लग रहे हैं। तृणमूल सुप्रीमो और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसके विरोध में पहले ही बड़े आंदोलन का आह्वान किया था। अब उन्होंने बंगाली उत्पीड़न रोकने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। विगत दिनों बोलपुर की प्रशासनिक बैठक से मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि हमारे 22 लाख प्रवासी कामगार बाहर काम कर रहे हैं। उन सभी को अभी वापस लाओ। मुख्यमंत्री का आदेश- दलालों की मदद से बाहर जाकर काम करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, तो दलाल रुकते नहीं हैं, वे भाग जाते हैं।

अगर उनके लौटने पर यहाँ रहने की जगह है, तो अच्छा और अगर नहीं है, तो हम शिविर बनाएंगे। हम राशन कार्ड, स्वास्थ्य साथी कार्ड, कर्मश्री परियोजना के तहत उनके लिए काम की व्यवस्था करेंगे। उन्हें जॉब कार्ड दिए जाएंगे। प्रवासियों को लक्ष्य कर उन्होंने कहा कि बताओ, कब आओगे? हम तुम्हें ट्रेन से लाएँगे। जैसे कोविड के दौरान लाए थे। आओ, बाहर रहने की ज़रूरत नहीं है। जो तुमसे प्यार नहीं करते, वे वहाँ न रहें। यहाँ तुम्हें राशन कार्ड, स्वास्थ्य साथी कार्ड दिए जाएँगे। तुम्हारे बच्चों का स्कूलों में दाखिला कराया जाएगा। गौरतलब है कि सोमवार की प्रशासनिक बैठक में मुख्यमंत्री ने 100 दिन काम करके राज्य लौटे प्रवासी मज़दूरों को भी शामिल करने का प्रस्ताव रखा।मुख्यमंत्री के भाषण का हर पहलू बंगाल और बंगालियों पर केंद्रित था। बंगाल के बुद्धिजीवियों के नाम पर उन्होंने कहा, स्वतंत्रता आंदोलन में किसने राह दिखाई? बंगाल के लोगों ने। राष्ट्रगान किसने लिखा? तुम बुरीबलम के तट पर हुई लड़ाई को कैसे भूल गए? साथ ही ममता ने चेतावनी दी, ज़रूरत पड़ी तो मैं अपनी जान दे दूँगी। मैं किसी को अपनी भाषा नहीं छीनने दूँगी। रोहिंग्या विवाद पर बोलते हुए ममता ने भाजपा पर भी निशाना साधा। वे किसी को रोहिंग्या कह रहे हैं, किसी को बांग्लादेशी बताकर वापस धकेल रहे हैं। लेकिन उनके पास सारे दस्तावेज़ हैं। वे इतने सारे रोहिंग्या कहाँ से लाएँगे? 21 जुलाई की रैली जैसे आँकड़ों का हवाला देते हुए, ममता ने कहा कि दुनिया में उतने रोहिंग्या नहीं हैं जितने इस राज्य में होने का दावा किया जा रहा है। बीरभूम में प्रशासनिक बैठक से, उन्होंने बंगाल के बूथ स्तर के अधिकारियों या बीएलओ से लोगों को बेवजह परेशान न करने की अपील की थी। कुछ घंटे बाद, ममता ने बोलपुर में एक जनसभा से चुनाव आयोग के खिलाफ आवाज़ उठाई।

तृणमूल नेता ने कहा, बंगाल में, (मतदाता सूची से) नाम हटा दो। आपको छऊ नृत्य, धमसा-मदल दिखाई देंगे। ढोल हैं, घंटियाँ हैं और शंख हैं। क्या आपने कभी उनके बारे में सुना है? मैं डफ बजाऊँगी। आयोग मतदाता-केंद्रित बिहार में मतदाताओं का घर-घर जाकर सर्वेक्षण कर रहा है। ममता ने सवाल उठाया कि क्या राज्य की माताएँ और बहनें भी इस राज्य में आयोग के सर्वेक्षणकर्ताओं के साथ घर-घर जाएँगी। उन्होंने आयोग पर डबल इंजन सरकार के नाम पर काम करने का भी आरोप लगाया।प्रशासनिक बैठक के बाद, बोलपुर में मुख्यमंत्री ने सड़क पर लगभग तीन किलोमीटर तक मार्च किया। ममता ने शांतिनिकेतन के कार्यकर्ताओं और पार्टी पदाधिकारियों का जुलूस में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने ज़िले की कोर कमेटी के सदस्य अनुब्रत मंडल का भी नाम लिया। बैठक के अंत में, उन्होंने सभी से बंगाल के अपमान के ख़िलाफ़ सड़कों पर उतरने का आह्वान किया।

लोगों को भड़काना चाहती हैं सीएम : सौमेंदु अधिकारी

निज संवाददाता : सीएम ममता बनर्जी ने हाल ही में एक बंगाली महिला और उसके बच्चे के साथ पुलिस की बर्बरता का दावा किया था। विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के भाई सौमेंदु अधिकारी का आरोप है कि ममता बनर्जी और उनकी पार्टी टीएमसी कह रही है कि बंगाली बोलने वाले लोगों के साथ दूसरे राज्यों में हिंसा और भेदभाव हो रहा है। इसी को लेकर सौमेंदु ने दिल्ली पुलिस को शिकायत की है। सौमेंदु अधिकारी ने अपनी शिकायत में कहा है कि ममता बनर्जी झूठी, मनगढ़ंत और सांप्रदायिक रूप से भड़काऊ कन्टेंट अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर डाल रही हैं। उनका कहना है कि ऐसा करके ममता बनर्जी दिल्ली पुलिस की छवि खराब करना चाहती हैं। इसके साथ वह लोगों को भड़काना चाहती हैं और समुदायों के बीच झगड़ा करवाना चाहती हैं। पिछले दिनों सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में ममता बनर्जी ने आरोप लगाया था कि दिल्ली पुलिस ने एक मां और बच्चे को बुरी तरह पीटा था। यह प्रवासी मजदूर परिवार पश्चिम बंगाल से दिल्ली में काम करने गया था। दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी अभिषेक धनिया ने मुख्यमंत्री के बयान का खंडन किया है। उन्होंने कहा कि पुलिस इस मामले की जांच कर रही है और जांच के बाद ही सच्चाई सामने आ पाएगी।

निर्विरोध पारित हुए विधेयक पर राष्ट्रपति ने मांगा स्पष्टीकरण

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल विधानसभा में पारित निर्विरोध पारित हुए विधेयक के संबंध में राष्ट्रपति ने राजभवन से क्या स्पष्टीकरण माँगा है? इस मुद्दे पर राज्य के प्रशासनिक हलकों में चर्चा शुरू हो गई हैं। पिछले शुक्रवार को पता चला कि राष्ट्रपति भवन भेजा गया निर्विरोध विधेयक कई सवालों और स्पष्टीकरण के साथ राज्यपाल सीवी आनंद बोस को वापस भेज दिया गया। राजभवन के सूत्रों के अनुसार, यह विधेयक इसी सप्ताह राजभवन से विधानसभा में वापस आ गया। वहाँ से यह विधेयक नवान्न विधानसभा में भेज दिया गया। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, यह विधेयक नवान्न विधानसभा से विधि विभाग को भेजा जाएगा। जैसे-जैसे यह प्रक्रिया आगे बढ़ी, प्रशासनिक समुदाय के एक वर्ग ने यह अनुमान लगाना शुरू कर दिया कि राष्ट्रपति ने इस विधेयक को मंज़ूरी देने के बजाय, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल को स्पष्टीकरण मांगने के लिए क्यों भेजा? मांगे गए स्पष्टीकरण का खुलासा भी हो गया है। राष्ट्रपति भवन ने राजभवन से यह पता लगाने को कहा है कि देश में महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार और हत्या के मामलों में सज़ा देने के लिए कोई क़ानून मौजूद है या नहीं। उस क़ानून के बावजूद, नया क़ानून बनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी? गौरतलब है कि 16 दिसंबर, 2012 की रात, दिल्ली के मुनिरका इलाके से महिपालपुर बाईपास जा रही एक चलती बस में 23 वर्षीय मेडिकल छात्रा से बलात्कार और हत्या कर दी गई थी। उस घटना के विरोध में देश में उबाल था। युवती को गंभीर हालत में पहले दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बाद में उसे उन्नत उपचार के लिए सिंगापुर ले जाया गया। 29 दिसंबर को सिंगापुर के एक अस्पताल में युवती की मौत हो गई। इस घटना के बाद राजधानी दिल्ली की सड़कों पर विरोध प्रदर्शन हुए। तत्कालीन मनमोहन सिंह सरकार ने जन विरोध से निपटने के लिए एक नया कानून बनाने का फैसला किया। उस कानून को बनाने से पहले, न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा समिति का गठन किया गया था। उन्होंने मात्र 29 दिनों में एक रिपोर्ट तैयार की और तत्कालीन केंद्र सरकार को सौंप दी। उस रिपोर्ट की सिफारिशों के आधार पर निर्भया विधेयक संसद के दोनों सदनों में पारित किया गया और एक नया कानून बनाया गया। उस कानून का हवाला देते हुए, राष्ट्रपति भवन से लेकर राजभवन तक नए कानून के बारे में स्पष्टीकरण माँगा गया है।

एलीमनी केस में महिला पर गुस्साए सीजेआई गवई, बोले

घर मिलेगा या 4 करोड़ रुपये, नौकरी खोजो और कमाकर खाओ

नयी दिल्ली : आजकल तलाक और एलीमनी से जुड़े हैरान कर देने वाले मामले काफी चर्चा में हैं और ताजा मामला सुप्रीम कोर्ट में एलीमनी केस की एक सुनवाई के दौरान सामने आया है। यहां एक महिला ने कोर्ट के समक्ष अपने पति से एलीमनी के तौर पर 12 करोड़ रुपये मांग की है। महिला के एलीमनी केस की सुनवाई सीजेआई बीआर गवई कर रहे थे। उन्होंने महिला की इस मांग पर उसे ही फटकार लगा दी और उसकी मांग को खारिज करते हुए कहा कि उसे खुद कमाकर खाना चाहिए।दरअसल, एलीमनी केस की सुनवाई में कोर्ट ने 12 करोड़ रुपये एलमनी मांगने पर महिला से कहा कि इतना पढ़ा लिखा होने के बावजूद पति से इतना पैसा

मांगना गलत है, बल्कि खुद काम करना चाहिए। सीजेआई बीआर गवई ने महिला से क्लियर कह दिया कि या तो उसे 4 करोड़ रुपये मिलेंगे या फिर एक घर मिलेगा।गुजारे के लिए ढूंढें नौकरीइतना ही नहीं सीजेआई बीआर गवई ने यह भी कह दिया कि महिला को अपने गुजारे के लिए नौकरी ढूंढनी चाहिए, क्योंकि वह पढ़ी लिखी है। बार एंड बेंच की रिपोर्ट बताती है कि सीजेआई गवई ने कहा कि महिला की शादी को सिर्फ 18 महीने हुए हैं और वह बीएमडब्ल्यू कार, 12 करोड़ रुपये और मुंबई में घर की डिमांड कर रही है।

एलीमनी की मांग करने वाली महिला से सीजेआई गवई कहा कि आप एक आईटी पर्सन हैं और आपने एमबीए भी किया है। बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे शहरों में आईटी पर्सन की बहुत डिमांड है तो आप भी वहां काम क्यों नहीं करती हैं?महिला नहीं कर सकती पति के पिता की संपत्ति पर दावासीजेआई बीआर गवई की बात पर इस महिला ने कहा है, मेरा पति एक अमीर आदमी है और उसने शादी खत्म करने के लिए मुझे सिजोफ्रेनिया से पीड़ित बता दिया है, क्या आपको मैं इस बीमारी से पीड़ित लगती हूं? सीजेआई गवई ने महिला से कहा, आप अपने पति के पिता की प्रॉपर्टी पर दावा नहीं कर सकती हैं।दूसरी ओर महिला के पति की ओर से पेश सीनियर माधवी दीवान ने कहा, महिला को काम भी तो करना चाहिए वह हर चीज के लिए ऐसे डिमांड नहीं कर सकती है।' उन्होंने कहा, महिला के पास घर के अलावा दो कार पार्किंग भी हैं, वह उससे भी कमाई कर सकती है, जिस बीएमडब्ल्यू का महिला सपना देख रही है वो 10 साल पुरानी है और कबाड़ में पड़ी है। सुनवाई के दौरान महिला ने आरोप लगाया कि पति ने उनके वकील को प्रभावित किया है।

4,000 नेताओं के साथ वर्चुअल बैठक करेंगे अभिषेक

निज संवाददाता : अभिषेक बनर्जी ने मतदाता सूची के पुनरीक्षण के संबंध में पार्टी के सभी क्षेत्र के नेताओं के साथ एक वर्चुअल बैठक की थी। मतदाता सूची के विशेष गहन अध्ययन के माहौल में तृणमूल के अखिल भारतीय महासचिव ने उसी बेड़े में एक और बैठक बुलाई है। यह बैठक 8 अगस्त को शाम 4 बजे शुरू होगी। तृणमूल सूत्रों के अनुसार, पार्टी के सभी जिला अध्यक्षों, सांसदों, विधायकों, महापौरों, उपमहापौरों, नगर पालिकाओं के अध्यक्षों, उपाध्यक्षों, जिला परिषद के

शेष पेज-2 पर

कृषकबंधु योजना के तहत सहायता प्रदान शुरू

मुख्यमंत्री ने की किसानों को वित्तीय सहायता देने की घोषणा

निज संवाददाता : राज्य सरकार ने कृषकबंधु योजना के तहत सहायता प्रदान करना शुरू कर दिया है। यह कार्यक्रम गत मंगलवार से शुरू कर दिया गया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया पर इस संबंध में एक संदेश दिया। सरकार हमेशा राज्य के किसानों के लिए मौजूद रही है। राज्य सरकार द्वारा हमेशा यही संदेश दिया गया है। किसान राज्य की संपत्ति और गौरव हैं। यही संदेश मुख्यमंत्री ने दिया।राज्य सरकार ने हमेशा बंगाल के किसानों को उनकी खेती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हमेशा बंगाल के किसानों के साथ खड़े होने का संदेश दिया है। इस बार खरीफ सीजन में किसानों को वित्तीय सहायता शुरू हो गई है। राज्य सरकार ने किसानों के लिए कृषकबंधु योजना शुरू की है।

किसानों और बटाईदारों को प्रति एकड़ 10 हजार रुपये की सहायता दी जाएगी। बताया गया है कि यह पैसा साल में दो किस्तों में दिया जाएगा। जिन किसानों के पास कम जमीन है, उन्हें भी यह वित्तीय सहायता मिलेगी। बताया जा रहा है कि आनुपातिक रूप से न्यूनतम 4 हज़ार रुपये दिए जाएँगे। इस बार राज्य के कुल 1 करोड़ 9 लाख किसान और बटाईदार यह सहायता प्राप्त कर रहे हैं। यह धनराशि सीधे किसानों और बटाईदारों के बैंक खातों में दी जा रही है। बताया जा रहा है कि कुल 2,930 करोड़ रुपये दिए जा रहे हैं। इस दिन, मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा, 2019 में इसकी शुरुआत के बाद से, हमने इस योजना के तहत अपने किसानों को कुल 24,086 करोड़ रुपये वितरित किए हैं। मुझे इस पर गर्व है! इतना ही नहीं, अगर किसी किसान की 18 से 60 वर्ष की आयु के बीच मृत्यु हो जाती है, तो उसके परिवार को सामाजिक सुरक्षा के लिए 2 लाख रुपये की सहायता भी दी जाती है। इस क्षेत्र में भी, बंगाल के लगभग 1 लाख 46 हज़ार किसान परिवारों को कुल 2,920 करोड़ रुपये की सहायता मिली है। मुख्यमंत्री ने किसानों का आभार व्यक्त करते हुए लिखा, मैं हमेशा सोचता हूं कि हमारे किसान हमारी संपत्ति हैं, हमारा गौरव हैं। हमारी सरकार आने वाले दिनों में भी उनके समग्र कल्याण के लिए इसी तरह काम करती रहेगी।

अब एआई तकनीक की जद में होंगे हावड़ा-सियालदह स्टेशन

- यौन अपराधों की रोकथाम के लिए लगाए जा रहे कैमरे
- यह मूलतः महिलाओं की सुरक्षा के लिए करेगा एक कवच का काम

निज संवाददाता : सियालदह और हावड़ा स्टेशनों पर हमेशा भीड़ रहती है। कोई भी उस भीड़ में छुपकर महिलाओं का यौन उत्पीड़न न कर सके, इसके लिए एआई तकनीक वाले कैमरे लगाकर व्यवस्था की जा रही है। महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए ऐसे ही कदमों के तहत, हावड़ा-सियालदह सहित देश के सात प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित फेशियल रिकग्निशन सिस्टम शुरू करने का निर्णय लिया गया है, जो यौन अपराधियों के चेहरे तुरंत पहचान लेगा।

सियालदह आरपीएफ के वरिष्ठ कमांडेंट मनोज कुमार सिंह ने बताया कि सियालदह स्टेशन पर 239 पुराने कैमरे हैं। अगले साल 500 एआई तकनीक वाले फेशियल रिकग्निशन सिस्टम कैमरे लगाए जाएँगे। हावड़ा स्टेशन पर भी इसी तकनीक वाले कैमरे लगाए जाएँगे। ये यौन उत्पीड़कों की पहचान करने में सक्षम हैं। बायोमेट्रिक तकनीक लोगों के विभिन्न चेहरे की विशेषताओं का विश्लेषण करती है और डेटाबेस में

संग्रहीत चेहरे की जानकारी से उनका मिलान करके लक्ष्य की पहचान करती है। यह मुख्य रूप से महिलाओं की सुरक्षा के लिए एक कवच का काम करेगा। मुंबई और नई दिल्ली में छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस जैसे महत्वपूर्ण स्टेशन भी परियोजनाओं की सूची में हैं।

पूर्वी रेलवे के आरपीएफ आईजी अमियनंदन सिन्हा ने बताया कि सियालदह और हावड़ा डिवीजनों के विभिन्न स्टेशनों पर वर्तमान में लगाए जा रहे नए कैमरे इसी तकनीक के हैं। उन्होंने कहा कि श्रावणी मेले के अवसर पर जसीडीह में लोगों की भारी भीड़ होती है। वहाँ भी ऐसे कैमरे लगे हैं। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के यौन अपराधियों पर राष्ट्रीय डेटाबेस (एनडीएसओ) में वर्तमान में 20 लाख से अधिक पंजीकृत यौन अपराधियों का बायोमेट्रिक डेटा है। सुरक्षित शहर परियोजना कोलकाता, दिल्ली, मुंबई और चेन्नई सहित आठ शहरों में शुरू की गई है। जहाँ सीसीटीवी कैमरों, चेहरे की पहचान करने वाले कैमरों और ड्रोन के माध्यम से 24 घंटे निगरानी लागू है। आरपीएफ और जीआरपी सूत्रों के अनुसार, डेटाबेस कोलकाता और राज्य में अपराधों में शामिल लोगों की तस्वीरें और जानकारी दर्ज करेगा।

इश्क करना पड़ा महंगा

रिवाल्वर लेकर बेटी के प्रेमी के घर पहुंचा पिता

निज संवाददाता : बेटी से प्यार करने की हिम्मत कैसे हुई? मैं उसे मार डालूँगा। पिता बेटी के प्रेमी के घर गया और उसे रिवॉल्वर दिखा जान से मारने की धमकी दी। लेकिन प्रेमी की माँ की चीखों ने उसे रोक दिया। माँ की चीखें सुनकर, ड्यूटी पर तैनात पुलिस ने उस व्यक्ति का पीछा किया। लगभग 200 मीटर तक उसका पीछा करने के बाद, पूर्व कोलकाता के टेंगरा पुलिस स्टेशन के अधिकारियों ने पिता को बंदूक और गोलियों के साथ गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार व्यक्ति का नाम भोलानाथ कर है। वह एंटाली के पॉटरी रोड का निवासी है। टेंगरा के शील लेन निवासी एक युवक कुछ महीने पहले उसकी बेटी से मिला था। दोनों के बीच प्यार पनपा। बेटी के प्यार में पड़ने की बात जानने पर पिता ने पहले लड़की की पिटाई की। पिता बेटी के प्रेमी पर इतना भड़का कि वह बदला लेने के लिए रिवॉल्वर में गोलियाँ भरीं और शील लेन की ओर चल पड़ा। देर रात, पिता ने बेटी के प्रेमी के घर का दरवाज़ा खटखटाया। जैसे ही घरवालों ने दरवाज़ा खोला, वह आदमी अंदर घुस आया। उसने अपनी जेब से रिवॉल्वर निकाली और गृहिणी से कहा कि उसके बेटे की हिम्मत कैसे हुई उसकी बेटी से प्यार करने की? उसने उसके बेटे को जान से मारने की धमकी दी। उसके साथ गाली-गलौज की गई। महिला और उसके बेटे ने पहले तो विरोध किया, लेकिन धमकी बढ़ती ही गई। फिर गृहिणी का गुस्सा फूट पड़ा। वह चिल्लाने लगी। उस आदमी को एहसास हुआ कि वह बदतमीज़ी कर रहा है, वह पीछे हट गया और हथियार लेकर घर से निकल गया। गृहिणी चिल्लाते हुए उसका पीछा करने लगी। टेंगरा थाने के अधिकारी पास ही एक गाड़ी में गश्त कर रहे थे। महिला को उस आदमी के पीछे भागते देख पुलिस ने उसका पीछा किया। कम से कम 200 मीटर तक उसका पीछा करने के बाद पुलिस ने भोलानाथ को पकड़ लिया। पुलिस ने बताया कि वे उससे पूछताछ कर रहे हैं और यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि उसे हथियार कहाँ से मिला।

कस्बा कांड के आरोपी मनोजीत ने ली थी गैंगस्टर लॉरेंस विश्नोई से प्रेरणा

- मनोजीत पर छेड़छाड़ से लेकर हत्या के प्रयास तक के आरोप
- हर दाखिले के लिए 50 हजार से लेकर 3 लाख रुपये तक की लेता था रिश्वत

निज संवाददाता : अब तक यह बात सबको पता चल चुकी है कि मनोजीत के खिलाफ पुलिस में कई बार शिकायतें दर्ज कराई गई थीं। उस मनोजीत की प्रेरणा गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई है। बिश्नोई को लगता था कि उसके खिलाफ पुलिस में जितनी ज़्यादा शिकायतें दर्ज होंगी, उतना ही अच्छा होगा। क्योंकि ऐसा करने पर, मांगे किसी और जगह से बिश्नोई जैसा नेटवर्क चलाकर शिक्षकों और छात्रों को अपने कब्ज़े में रख सकेगा।मनोजीत मिश्रा को जानने वाले एक लॉ स्टूडेंट ने टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया, मनोजीत का मानना था कि उसके खिलाफ जितनी ज़्यादा आपराधिक शिकायतें दर्ज होंगी, उसकी प्रतिष्ठा उतनी ही बढ़ेगी। पुलिस रजिस्टर में मनोजीत के खिलाफ 11 मामले दर्ज हैं। पुलिस उसे पहले भी कई बार गिरफ्तार कर चुकी है। मनोजीत पर छेड़छाड़ से लेकर हत्या के प्रयास तक के आरोप हैं।दावा किया जा रहा है कि मनोजीत मिश्रा हर साल कॉलेज में 15 छात्रों का दाखिला कराता था। वह हर दाखिले के लिए 50 हज़ार से लेकर 3 लाख रुपये तक की रिश्वत लेता था। इस बीच, मनोजित न केवल छात्रों को, बल्कि कॉलेज के शिक्षकों को भी धमकाता था। एक बार, एक शिक्षक ने छात्रों के अवैध प्रवेश का मनोजित द्वारा विरोध किया था। उस समय, मनोजित ने कथित तौर पर कॉलेज के बाहर शिक्षक को जान से मारने की धमकी दी थी।इस बीच, पुलिस ने अदालत में शिकायत की है कि कस्बा सामूहिक बलात्कार मामले के आरोपी मनोजित मिश्रा जाँच में सहयोग नहीं कर रहे हैं। ऐसे में, पुलिस ने फिलहाल गिरफ्तार किए गए चारों लोगों की हिरासत नहीं मांगी है। अलीपुर अदालत ने उन्हें 22 जुलाई तक अंतर-विभागीय हिरासत में भेज दिया है। संयोग से, पुलिस अगले तीन दिनों के लिए मनोजित की हिरासत मांग सकती है। पता चला है कि सभी फोरेंसिक परीक्षणों की रिपोर्ट मिलने के बाद पुलिस फिर से मनोजित की हिरासत मांग सकती है। जांच में पता चला है कि मनोजित और अन्य दो आरोपियों ने कुछ समय पहले बलात्कार की योजना बनाई थी। कॉल लॉग के मुताबिक, 25 जून को अपराध से पहले तीनों के बीच कई बार बातचीत हुई थी। इसी बीच, साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज में लॉ की छात्रा के साथ बलात्कार के अगले दिन, मनोजीत ने कोलकाता के देशप्रिय पार्क में एक प्रभावशाली व्यक्ति से संपर्क किया। जिस व्यक्ति से मनोजीत ने संपर्क किया था, उसने पहले उसकी मदद की थी। हालाँकि, इस बार, स्थिति को समझते हुए, उस व्यक्ति ने उसे पीछे हटने के लिए कहा।

सभी पुलों की शुरू होगी स्वास्थ्य जाँच

गुजरात पुल हादसे के बाद बंगाल सरकार ने ली सबक

निज संवाददाता : पिछले दिनों गुजरात के वडोदरा में एक पुल गिर गया। 16 लोगों की मौत हो गई। महिसागर नदी पर बने गंभीरा पुल के गिरने और नदी में गिरती कारों के नजारे ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इस घटना के बाद बंगाल सरकार की नींद खुली और उसने इस विषय में कई कदम उठाने की बात कही है। इस बीच, पश्चिम बंगाल सरकार ने एहतियाती कदम उठाए। उस घटना से सबक लेते हुए, लोक निर्माण विभाग ने अब राज्य के सभी पुलों पर स्वास्थ्य जाँच शुरू करने का आदेश दिया है।प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, प्रत्येक जिले के लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरों और अधिकारियों को विशेष निर्देश पहले ही भेज दिए गए हैं। राज्य में जो पुल लंबे समय से उपयोग में हैं या जिन पर भारी यातायात होता है, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी। लोक निर्माण विभाग ने कहा है कि इन सभी पुलों का विशेष निरीक्षण किया जाएगा। निरीक्षण के बाद ज़रूरत पड़ने पर मरम्मत का काम भी किया जाएगा। जानकारी के अनुसार, पूरे राज्य में छोटे-बड़े लगभग 2,500 पुल हैं। हालाँकि, अभी यह स्पष्ट नहीं है कि इतनी बड़ी संख्या में पुलों का निरीक्षण कब तक पूरा होगा।

संभावना है कि सबसे जोखिम भरे पुलों की तत्काल पहचान की जाएगी और उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।इससे पहले, 31 मार्च, 2016 को पोस्ता में हुए फ्लाईओवर हादसे और फिर माझेरहाट में हुए पुल हादसे की भयावह यादें राज्य के लोग अभी तक नहीं भूले हैं। उस समय, व्यस्त समय में, नवनिर्मित फ्लाईओवर का एक हिस्सा अचानक ढह गया। कई लोगों की जान चली गई। उस घटना के सदमे ने प्रशासन और आम लोगों के मन पर गहरा प्रभाव डाला। परिणामस्वरूप, सरकार ऐसी आपदा को फिर से नहीं देखना चाहती। इसीलिए यह पहल की गई है। विशेषज्ञों के अनुसार, समय के साथ पुलों की संरचना कमजोर हो जाती है। यदि नियमित निरीक्षण और रखरखाव नहीं किया जाता है, तो यह एक बड़ा खतरा हो सकता है। गुजरात की घटना के बाद, पश्चिम बंगाल ने पहले से ही सावधानी बरतते हुए इस तरह के बुनियादी ढांचे के निरीक्षण का रास्ता अपनाया है। जिसे संबंधित हलकों द्वारा काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

टीटागढ़ रेल सिस्टम ने लीज पर ली 40 एकड़ जमीन

- बंगाल में वंदे भारत व मेट्रो को मिली बड़ी दिशा

निज संवाददाता : टीटागढ़ रेल सिस्टम लिमिटेड ने एक बड़ी ज़मीन का अधिग्रहण किया है। टीटागढ़ रेल सिस्टम ने लगभग 40 एकड़ ज़मीन लीज़ पर ली है। उन्होंने इसे पश्चिम बंगाल सरकार से 99 साल के लिए लीज़ पर लिया है। यह ज़मीन कोटरंग और भद्रकाली मौज़ा में है। गौरतलब है कि टीटागढ़ रेल सिस्टम लिमिटेड ने बंगाल में एक बड़ी पहल की है। उनके पास औद्योगिक विस्तार की एक बड़ी योजना है। इस ज़मीन के अधिग्रहण का मुख्य उद्देश्य वंदे भारत के उत्पादन के लिए और सुविधाएँ प्रदान करना है। साथ ही, इस नई पहल से मेट्रो रेक के उत्पादन में भी आसानी होगी। उत्तरपाड़ा में लगभग 34 एकड़ ज़मीन पर उनका एक प्लांट है। इस बार विस्तार का एक नया अवसर मिलेगा। 12 जुलाई को दोनों पक्षों के बीच इस ज़मीन के पट्टे को लेकर एक समझौता हुआ। कुल मिलाकर, इस ज़मीन की लीज़ कीमत 126.63 करोड़ रुपया है। कंपनी ने कहा है कि अतिरिक्त ज़मीन का इस्तेमाल अतिरिक्त उत्पादन के लिए किया जाएगा। इस ज़मीन का इस्तेमाल मुख्य रूप से मेट्रो कोच और वंदे भारत के उत्पादन के लिए किया जाएगा। इकोनॉमिक टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस औद्योगिक विस्तार से टीटागढ़ रेल औद्योगिक परिसर की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी। वित्तीय वर्ष 2028 तक इस उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 850 प्रति वर्ष करने की योजना बनाई गई है। आने वाले दिनों में 300 प्रति वर्ष की बजाय 850 रेक प्रति वर्ष बनाने की योजना बनाई गई है।

बंगाल में बेहतर हुआ है रोजगार एवं लोगों का जीवन-स्तर

- नीति आयोग की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

निज संवाददाता : हाल ही में आई नीति आयोग की रिपोर्ट में पश्चिम बंगाल में रोजगार बढ़ने के साथ-साथ यहां के जीवन स्तर में सुधार होने का उल्लेख किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक बंगाल आगे बढ़ रहा है। यानी केंद्र की रिपोर्ट बंगाल की सफलता को स्वीकार करती है। हाल ही में प्रकाशित नीति आयोग की पश्चिम बंगाल के लिए राज्य सारांश रिपोर्ट ने स्वीकार किया है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के कार्यकाल में बंगाल के लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। यह राष्ट्रीय मानक से भी आगे है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में बंगाल की सालाना बेरोज़गारी दर केवल 2.2 प्रतिशत रही, जबकि राष्ट्रीय औसत 3.2 प्रतिशत है। विशेषज्ञों के अनुसार, केंद्र के मनरेगा के 100 दिनों के बंद के बावजूद बंगाल को यह सफलता कर्मश्री जैसी अपनी परियोजनाओं और आर्थिक विकास के कारण मिली है। बंगाल पर नीति आयोग की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है- 'राज्य ने पिछले कुछ वर्षों में जीवन स्तर सूचकांक में सुधार किया है। 2019-2021 के अनुमानों के मुताबिक बंगाल में घरों में पीने के पानी की उपलब्धता राष्ट्रीय मानक से थोड़ी अधिक है और बिजली व शौचालय की सुविधाएं भी राष्ट्रीय मानक के करीब हैं।' नीति आयोग जैसी केंद्र सरकार की शीर्ष संस्था द्वारा बंगाल के जीवन स्तर पर दी गई यह जानकारी महत्वपूर्ण है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह रिपोर्ट उस दुष्प्रचार का सटीक जवाब है जो केंद्र में सत्तारूढ़ दल लगातार यह कहकर फैला रहा है कि बंगाल पूरे देश में पिछड़ रहा है। नीति आयोग की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि जीवन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य क्षेत्र में विकास और बेरोजगारी में कमी समेत कई क्षेत्रों में बंगाल राष्ट्रीय औसत से आगे है। केंद्र सरकार की शीर्ष संस्था नीति आयोग की रिपोर्ट में बंगाल की शिशु मृत्यु दर और शिक्षा के कई क्षेत्रों में सराहना की गई है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि बंगाल में शिशु मृत्यु दर या स्कूल छोड़ने की दर भाजपा शासित राज्यों की तुलना में काफी कम है। नीति आयोग का मानना है कि राज्य सरकार के कदम शिशु मृत्यु दर को कम करने में कारगर हैं। इसके साथ ही, केंद्रीय एजेंसी ने यह भी माना है कि पेयजल आपूर्ति, जीवन स्तर और सामाजिक-आर्थिक विकास में बंगाल राष्ट्रीय औसत से आगे है। हालांकि, रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि महिलाओं के रोजगार की दर अभी भी कम है।प्रशासनिक हलकों का दावा है कि केंद्रीय रिपोर्ट में इस मान्यता ने विपक्ष की आलोचना को काफी हद तक कुंद कर दिया है। गौरतलब है कि इस रिपोर्ट के पहले पन्ने पर भारत के मानचित्र पर बंगाल में बिहार को दर्शाने को लेकर विवाद छिड़ गया था।

दोषी संजय ने खुद को बताया निर्दोष, की बरी करने की मांग

आरजी कर मामला

- हाईकोर्ट ने मामला स्वीकार किया सीबीआई ने मांगी सजा-ए मौत
- सितंबर में शुरू होगी सुनवाई

निज संवाददाता : कलकत्ता हाईकोर्ट ने आरजी कर मामले में दोषी संजय रॉय का मामला स्वीकार कर लिया है। उन्होंने अदालत में बरी करने के लिए याचिका दायर की थी। गत बुधवार को न्यायमूर्ति देबांशु बसाक और न्यायमूर्ति मोहम्मद शब्बर रशीदी की खंडपीठ ने कहा कि इस मामले की सुनवाई भी सीबीआई द्वारा दायर मामले के साथ ही होगी। अगली सुनवाई सितंबर में होगी। हाईकोर्ट ने यह भी कहा कि पीड़ित परिवार चाहे तो इस मामले में अदालत के साथ सहयोग कर सकता है। संजय के वकील कौशिक गुप्ता ने कहा कि कुछ सबूतों के आधार पर आरोप साबित नहीं होते। उनके मुवक्किल को बरी करने के पर्याप्त कारण हैं। सियालदह की एक अदालत ने आरजी कर मामले में सिविक वालंटियर संजय को दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। सीबीआई ने निचली अदालत के फैसले को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में मामला दायर किया है। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने दोषी के लिए मौत की सजा की मांग की है। ऐसे में, संजय ने बरी करने की मांग करते हुए उच्च न्यायालय में एक प्रतिवाद दायर किया। संजय को पिछले साल जनवरी में सियालदह की एक अदालत ने आरजी कर में एक मेडिकल छात्रा के बलात्कार और हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। बर्खास्त सिविक वालंटियर के वकील ने उस फैसले को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में एक मामला दायर किया है।सियालदह अदालत द्वारा फैसला सुनाए जाने के बाद, संजय के वकील ने कहा कि मैं उच्च न्यायालय जाऊँगा। कोई भी आरोपी, जो दोषी पाया जाता है, उसे उच्च न्यायालय में अपील करने का अधिकार है। मैं इस अपील की योजना बनाने में समय लगाऊँगा। उन्होंने यह भी कहा कि वे संजय, जिसे दोषी पाया गया है, को प्रताड़ित मानते हैं।

लक्ष्य 2026 का बंगाल विधानसभा चुनाव

दिसंबर से अमित शाह लगातार करेंगे राज्य का दौरा

निज संवाददाता : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बिहार में विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद दिसंबर से नियमित रूप से बंगाल का दौरा शुरू करेंगे। भाजपा सूत्रों का कहना है कि केंद्रीय गृह मंत्री ने 2026 में बंगाल में होने वाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए यह योजना बनाई है। इतना ही नहीं, शाह दिसंबर से हर महीने कम से कम तीन बार राज्य का दौरा करेंगे। चुनाव प्रचार शुरू होते ही उनका आना-जाना बढ़ जाएगा। इसलिए, अमित शाह के लिए न्यूटाउन इलाके में एक गेस्ट हाउस या बड़ा घर खोजा जा रहा है। बंगाल आने पर वह वहीं ठहरेंगे। अगर केंद्रीय गृह मंत्री बंगाल रहेंगे तो उनका कार्यालय भी कुछ हद तक यहां स्थानांतरित किया जाएगा। केंद्र सरकार के लिए काम करते हुए, वे लगातार तीन-चार दिनों तक यहां विधानसभा चुनाव में पार्टी के लिए संगठनात्मक बैठकें, जनसभाएं और अन्य कार्य करेंगे। वह कहां ठहरेंगे, यह अभी तय नहीं है। हालांकि, पता चला है कि न्यूटाउन इलाके में एक घर की तलाश की जा रही है। जहां न सिर्फ़ दफ्तर, बल्कि सरकारी अधिकारी भी ठहर सकें। वैसे अभी जब वे कोलकाता आते हैं, तो न्यूटाउन के एक निजी होटल की 32वीं मंज़िल पर ठहरते हैं। यह उनकी पसंदीदा जगह है।

परीक्षण हुआ सफल, अब यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित

सभी डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाएगा रेल मंत्रालय

निज संवाददाता : यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए और किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में बदमाशों को पकड़ने के लिए रेलवे मंत्रालय सभी रेल डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाने जा रहा है। गत दिनों को रेल मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान में इसकी जानकारी दी गई। रेलवे सूत्रों के अनुसार, उत्तर रेलवे के अंतर्गत आने वाले लोको इंजन और डिब्बों में परीक्षण के तौर पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की प्रक्रिया पहले ही पूरी हो चुकी है। निगरानी कैमरों के परीक्षण को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया के चलते, इस बार अश्विनी वैष्णव मंत्रालय ने सभी रेलवे ज़ोन के डिब्बों और लोको इंजन में सीसीटीवी कैमरे लगाने का निर्णय लिया है।

रेलवे के बयान में कहा गया है, इस कदम से यात्री सुरक्षा की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार होगा। बदमाश यात्रियों की सहजता का फायदा उठाते हैं। कैमरों की मदद से ऐसी घटनाओं में काफी कमी आ सकती है। हालाँकि, रेलवे ने बताया है कि यात्रियों की गोपनीयता की रक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे केवल डिब्बों के प्रवेश द्वार पर ही लगाए जाएँगे। शनिवार को रेल मंत्री वैष्णव और रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने रेलवे के डिब्बों और इंजनों में सीसीटीवी कैमरे लगाने के कार्य का निरीक्षण किया। उनके साथ रेलवे बोर्ड के अधिकारी भी मौजूद थे। रेलवे सूत्रों के अनुसार, बहुत जल्द 15 हज़ार इंजनों और 74 हज़ार डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। प्रत्येक डिब्बे में 4 सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएँगे। इंजन में छह निगरानी कैमरे होंगे।

पार्थ मामले की सुनवाई अब सुप्रीम कोर्ट में

निज संवाददाता : न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जयमाल्य बागची की सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने पूर्व राज्य मंत्री पार्थ चटर्जी की जमानत याचिका खारिज कर दी है। न्यायमूर्ति कांत ने कहा कि मामले की सुनवाई दूसरी पीठ में होगी। न्यायमूर्ति बागची पीठ बदल रहे हैं क्योंकि वह मामले की सुनवाई करने के इच्छुक नहीं हैं। संयोग से अगर उसी पीठ का कोई न्यायाधीश किसी विशेष मामले की सुनवाई नहीं करना चाहता, तो मामला नई पीठ के पास चला जाता है। पार्थ को सीबीआई ने एक भर्ती भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार किया था। उन्होंने ज़मानत के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। वहाँ जमानत अर्ज़ी मंजूर नहीं हुई। इसके बाद पूर्व शिक्षा मंत्री ने सर्वोच्च न्यायालय में मामला दायर किया।

भव्य स्वरूप में दिखेगा आलम बाजार का श्री श्री सत्यनारायण मंदिर

- भूमि व वास्तु पूजन संपन्न

निज संवाददाता : उत्तर 24 परगना जिले के बरानगर के आलम बाजार स्थित श्री श्री सत्यनारायण मंदिर अब भव्य स्वरूप में दिखाई देगा। मंदिर निर्माण के लिए नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए गुरुवार को अनुष्ठानिक तौर पर भूमि और वास्तु पूजन का आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर बरानगर की विधायिका सायंतिका बनर्जी, 7 नंबर वार्ड की पार्षद नीलू गुप्ता समेत कई विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति देखी गई। भूमि व वास्तु पूजन के मुख्य आयोजक और नए स्वरूप में निर्माण होने वाले मंदिर के प्रधान ट्रस्टी अजय गुप्ता ने बताया कि हिंदी भाषी बहुल इलाका आलम बाजार का शताब्दी प्राचीन श्री श्री सत्यनारायण मंदिर की हालत वर्षों से जर्जर थी। मंदिर के भीतर प्रवेश करने वाले भक्तों के लिए खतरा बना हुआ था। एक जर्जर मंदिर में भगवान विराजेंगे, यह भक्तों को उचित नहीं लग रहा था। इसलिए उन्होंने मंदिर को ढहाकर नए स्वरूप में मंदिर का निर्माण करने का संकल्प लिया। वार्ड नंबर 5 के अधीन पुराने मंदिर की जगह पर ही भव्य और नए स्वरूप में मंदिर का निर्माण होगा। नए मंदिर की संरचना, दीवारों, छत, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों को बदला जाएगा। इस अवसर पर 5 नंबर वार्ड के पार्षद आरिफ़ हुसैन समेत कई विशिष्ट लोग उपस्थित थे।

4,000 नेताओं के साथ ....

पेज 1 का बाकी

सभी सदस्यों और पंचायत समिति के अध्यक्षों को बैठक में शामिल होने के लिए कहा गया है। इसके अलावा, पार्टी के शाखा संगठनों के अध्यक्षों, पार्टी की मुख्य राज्य समिति के सभी सदस्यों और कोलकाता नगर निगम के सभी पार्षदों को भी इसमें शामिल होने को कहा गया है। बीरभूम और उत्तर कोलकाता के मामले में कोर कमेटी के सभी सदस्यों को बुलाया गया है।

सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में मुगल सम्राट बाबर को बताया क्रूर और निर्दयी शासक

फिर विवादों में एनसीईआरटी की पाठ्य-पुस्तक

निज संवाददाता : पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) स्कूली पाठ्यक्रम में ऐसे बदलाव कर रही है जिनसे कई तरह के विवाद पैदा हुए हैं। इस बार, एनसीईआरटी की कक्षा 8वीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में मुगल सम्राट बाबर को एक क्रूर और निर्दयी शासक बताया गया है। माना जा रहा है कि इस पुस्तक को लेकर भी विवाद खड़ा होने वाला है। पुस्तक में अकबर और औरंगजेब के शासनकाल के बारे में भी जानकारी दी गई है। गौरतलब है कि पाठ्यपुस्तक में बताया गया है कि प्रथम मुगल सम्राट बाबर एक क्रूर और निर्दयी शासक था। उसने कई गांवों के सभी लोगों को मार डाला था। यह भी दावा किया गया है कि अकबर का शासनकाल क्रूरता और सहिष्णुता का मिश्रण था। औरंगजेब के बारे में लिखा है-उसने कई मंदिरों और गुरुद्वारों को नष्ट किया। कुल मिलाकर, पुस्तक में मुगल काल के धार्मिक परिवेश के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। हालांकि, पुस्तक में एक चेतावनी भी है। इसमें कहा गया है, यद्यपि यहां इतिहास के काले अध्यायों की जानकारी दी गई है, फिर भी अतीत की घटनाओं के लिए आज किसी को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

उल्लेखनीय है कि कक्षा 8 की 'समाज की खोज : भारतीय और उससे आगे' नामक पुस्तक छात्रों को पहली बार दिल्ली शासन और मुगल काल के बारे में बताई जा रही है। इसमें ऐसा ही वर्णन है। बड़ी बात यह कि एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक पर विवाद आज का नहीं है। इससे पहले, एनसीईआरटी ने कक्षा 12 के इतिहास के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए कहा था कि हाल के पुरातात्विक शोधों ने हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण के रूप में भारत में विदेशी आर्यों के आगमन के सिद्धांत का खंडन किया है। यानी आर्यों को भारत के मूल निवासी के रूप में देखा जाना चाहिए। इसी तरह, कक्षा 6 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में, एनसीईआरटी ने बिरसा मुंडा पर एक अध्याय से हिंदू शब्द हटा दिया था। पिछली पुस्तक में उस अध्याय में कहा गया था कि बिरसा मुंडा ने मिशनरियों और हिंदू जमींदारों का विरोध किया था। वाक्य से हिंदू शब्द हटा दिया गया है। मूलतः, इतिहास की किताबों में इस तरह के बदलावों ने सवाल खड़े किए हैं। सवाल उठता है कि क्या यह किसी खास मकसद से किया जा रहा है?

ऐसा लगता है कि शक-हूण वंश, पठान-मुगलों के मेल से बने भारत से अलग एक अलग आख्यान पेश करने की कोशिश की जा रही है। जागरूक जनता का एक वर्ग ऐसा ही सोचता है। स्वाभाविक रूप से यह सवाल भी उठा है कि क्या इतिहास को इस तरह लोगों की सामूहिक स्मृति से मिटाया जा सकता है? माना जा रहा है कि नई पाठ्यपुस्तकों के इर्द-गिर्द यह बहस और तेज़ होगी।

डिजिटल गिरफ्तारी मामले में भारत का पहला फैसला

कल्याणी कोर्ट ने 9 लोगों को सुनाई आजीवन कारावास की सजा

- मुंबई पुलिस का फर्जी पहचान बताकर 1 करोड़ रुपये की उगाही करने का आरोप
- अक्टूबर 2024 में हुई थी यह सनसनीखेज धोखाधड़ी की घटना

निज संवाददाता : हाल ही में, डिजिटल गिरफ्तारी जैसे साइबर अपराध बढ़ रहे हैं। ऐसे माहौल में, अदालत ने ऐसे धोखाधड़ी के मामलों में अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा सुनाई है। रानाघाट के एक सेवानिवृत्त कृषि वैज्ञानिक पर मुंबई पुलिस की फर्जी पहचान बताकर 1 करोड़ रुपये की उगाही करने का आरोप लगा था। कल्याणी की विशेष अदालत ने इस घटना में पकड़े गए 9 लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। कानूनी समुदाय के अनुसार, डिजिटल गिरफ्तारी के मामले में भारत में यह पहली सजा है। अदालत के सूत्रों के अनुसार, यह सनसनीखेज धोखाधड़ी की घटना अक्टूबर 2024 में हुई थी।

शिकायतकर्ता पार्थ मुखर्जी का दावा है कि उन्हें व्हाट्सएप कॉल पर संपर्क किया गया और बताया गया कि वह कई अपराधों में शामिल हैं और जाँच के लिए उन्हें डिजिटल रूप से घर में नजरबंद रहना होगा। इस डिजिटल गिरफ्तारी के दौरान, उन्हें कई ऑनलाइन माध्यमों से पैसे भेजने के लिए मजबूर किया गया। धोखेबाजों ने सात दिनों के भीतर उनसे 1 करोड़ रुपये ट्रांसफर कर लिए।घटना के बाद, 6 नवंबर को कल्याणी साइबर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई और रानाघाट पुलिस ज़िले ने जाँच शुरू की। आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए, जाँचकर्ताओं ने पाया कि धोखाधड़ी का यह गिरोह मुख्य रूप से कंबोडिया से संचालित हो रहा था। पैसे जमा करने के लिए इस्तेमाल किए गए खाते देश भर में फैले इस गिरोह के सहयोगियों के नाम पर थे। एक लंबी कार्रवाई के बाद, राज्य पुलिस ने गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा में छापेमारी कर 13 लोगों को गिरफ्तार किया। कई एटीएम कार्ड, पासबुक और महत्वपूर्ण दस्तावेज़ ज़ब्त किए गए।इस मामले में आरोप पत्र 2600 पृष्ठों का था। शुरुआत में, जब 13 में से 9 आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत मिले, तो उन्हें सजा सुनाई गई। मुकदमे में 29 गवाह शामिल हुए, जिनमें से छह दूसरे राज्यों के थे। मामले की सुनवाई साढ़े चार महीने में पूरी हुई।

इस मामले में दोषी ठहराए गए आरोपियों में मोहम्मद इम्तियाज अंसारी, शाहिद अली शेख, शाहरुख रफीक शेख, जतिन अनूप लाडवाल, रोहित सिंह, रूपेश यादव, साहिल सिंह, पठान सुमैया बानो और फलदू अशोक शामिल हैं। इन सभी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। सरकारी वकील बिवास चटर्जी ने बताया कि उनके खिलाफ राज्य और देश के विभिन्न थानों में 108 और धोखाधड़ी के मामले दर्ज हैं। अनुमानित कुल धोखाधड़ी की राशि लगभग 100 करोड़ रुपये है। यह फैसला न केवल एक नए प्रकार की धोखाधड़ी के खिलाफ एक कड़ा संदेश है, बल्कि साइबर अपराध पर अंकुश लगाने की दिशा में देश की न्यायिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

धनखड़ के इस्तीफे के पीछे क्या है राज, वाकई हैं बीमार या कुछ और?

- विपक्ष को अचानक इस्तीफे की वजह पर संदेह, केंद्र ने साधी चुप्पी

निज संवाददाता : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उपराष्ट्रपति पद से जगदीप धनखड़ का इस्तीफा स्वीकार कर लिया। धनखड़ ने सोमवार रात राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा भेजा था। गत मंगलवार सुबह इसे स्वीकार कर लिया गया। विपक्ष उन्हें उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति पद से हटाना चाहता था। उन्होंने उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया। लेकिन विपक्ष जगदीप धनखड़ के सोमवार रात उपराष्ट्रपति पद से अचानक इस्तीफे को कुछ असामान्य मान रहा है। हालांकि, धनखड़ ने खुद अपने इस्तीफे में लिखा है कि उन्होंने शारीरिक अस्वस्थता के कारण पद छोड़ने का फैसला किया है। हालांकि, विपक्षी दल इस बात को मानने से कतरा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में उपराष्ट्रपति समेत विभिन्न पदों पर धनखड़ के काम का जिक्र किया। उन्होंने उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना भी की। हालांकि, केंद्र ने अभी तक उनके इस्तीफे को लेकर विपक्ष के सवालों का जवाब नहीं दिया है।

कांग्रेस के अखिल भारतीय अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने धनखड़ के इस्तीफे के कारण पर संदेह व्यक्त किया है। गत मंगलवार सुबह संसद परिसर में प्रवेश करते हुए उन्होंने कहा कि केवल वही (धनखड़) ही कारण जानते हैं। हमें इस बारे में कुछ नहीं कहना है। या तो वह जानते हैं या सरकार जानती है। शिवसेना (उद्धव) के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने एक कदम आगे बढ़कर स्पष्ट किया है कि वह स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफे की बात को मानने को तैयार नहीं हैं। राउत को शक है कि इसके पीछे कोई बड़ी राजनीति है।

शिवसेना (उद्धव) सांसद के अनुसार, इसके पीछे कोई राजनीतिक खेल है, जो जल्द ही सामने आ जाएगा। उपराष्ट्रपति का इस्तीफा कोई साधारण घटना नहीं है। राउत ने कहा कि उन्होंने सोमवार को भी धनखड़ को देखा था। तब वह स्वस्थ लग रहे थे। उद्धव खेमे की एक अन्य राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने भी कहा कि सोमवार को धनखड़ ठीक दिख रहे थे।

पिछले दिनों धनखड़ को आमने-सामने देखने वाले कई सांसद धनखड़ की बीमारी को लेकर संशय में हैं। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद अखिलेश प्रसाद के मुताबिक, उन्होंने सोमवार शाम करीब साढ़े पांच बजे धनखड़ से मुलाकात की। उस समय वह काफी खुश दिख रहे थे। उनका एकमात्र विचार सत्र को सुचारू रूप से चलाना था। लेकिन क्या धनखड़ को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया था? राज्यसभा में कांग्रेस के एक अन्य सांसद सैयद नासिर हुसैन ने भी यह सवाल उठाया है।

उन्होंने कहा, 'कल भी वह (धनखड़) राज्यसभा के कामकाज में व्यस्त थे। क्या उन्होंने खुद इस्तीफा दिया या उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया, यह खुलकर सामने आना चाहिए। एमके स्टालिन की डीएमके ने भी धनखड़ के अचानक इस्तीफे पर सवाल उठाए हैं। स्टालिन की पार्टी के सांसद टीआर बालु ने गत मंगलवार सुबह साफ तौर पर दावा किया कि धनखड़ ने दबाव के कारण इस्तीफा दिया।

भाजपा नेता धनखड़ को 2019 में एक बार पश्चिम बंगाल का राज्यपाल बनाया गया था। उस समय धनखड़ का राज्य सरकार के साथ विभिन्न मुद्दों पर टकराव चल रहा था। बाद में, 2022 में वह उपराष्ट्रपति बने। संविधान के अनुसार, भारत का उपराष्ट्रपति संसद के ऊपरी सदन, राज्यसभा की अध्यक्षता करता है। राज्यसभा के सभापति रहते हुए विपक्षी सांसदों ने उन पर बार-बार आपत्ति जताई है। विपक्षी दलों ने सदन के संचालन में पक्षपात के आरोप भी लगाए हैं। विपक्ष ने उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया था। हालाँकि, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने उस समय इसे खारिज कर दिया था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण धनखड़ के अचानक इस्तीफे ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। बीते दिनों राज्यसभा में विपक्ष द्वारा न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा को हटाने की मांग को लेकर एक प्रस्ताव पेश किया गया था। विभिन्न स्रोतों पर आधारित एनडीटीवी की एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि विवाद वहीं से शुरू हुआ। उस समय धनखड़ ने नोटिस स्वीकार कर लिया और उच्च सदन के महासचिव से आवश्यक कार्रवाई करने को कहा। सूत्र का दावा है कि केंद्र ने यह कदम ठीक से नहीं उठाया। राज्यसभा में विपक्ष के नोटिस को स्वीकार किए जाने के परिणामस्वरूप, केंद्र ने न्यायपालिका को भ्रष्टाचार से मुक्त रखने की अपनी साख खो दी। सूत्र का दावा है कि केंद्र ने इस मुद्दे पर उपराष्ट्रपति को भी बुलाया था। हालाँकि, धनखड़ ने केंद्र के बयान पर आपत्ति जताई और कुछ बहस भी हुई, सूत्र का दावा है।

गौरतलब है कि सोमवार को राज्यसभा की कार्य मंत्रणा समिति की बैठक थी। बैठक की अध्यक्षता राज्यसभा के सभापति धनखड़ ने की। पहली बैठक दोपहर 12:30 बजे हुई। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर लिखा कि बैठक में राज्यसभा में भाजपा नेता जेपी नड्डा और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू भी मौजूद थे। लेकिन बाद में, समिति की बैठक शाम 4.30 बजे बुलाई गई। नड्डा या रिजिजू बैठक में नहीं आए। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि दोनों जानबूझकर बैठक से अनुपस्थित थे। उन्होंने आगे दावा किया कि सोमवार दोपहर 1 बजे से शाम 4.30 बजे के बीच कुछ गंभीर हुआ होगा।

2 अगस्त से शुरू होगा 'आमादेर पाड़ा, आमादेर समाधान' कार्यक्रम

- सीएम ममता बनर्जी ने की थी घोषणा
- बंगाल के सभी 80,000 बूथों पर शिविर लगाएगी राज्य सरकार

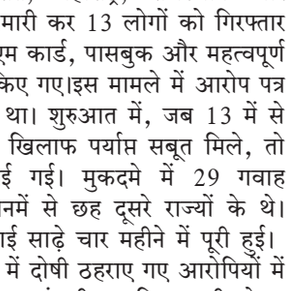

निज संवाददाता : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हाल ही में वृहद स्तर के संपर्क कार्यक्रम की घोषणा की। यह वर्ष 2021 के चुनावों से पहले शुरू की गई एक अन्य कल्याणकारी पहल के समान है। पश्चिम बंगाल में अगले वर्ष यानी 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं। पिछले दिनों ममता ने राज्य सचिवालय 'नवान्न' में 8,000 करोड़ रुपये के आमादेर पाड़ा, आमादेर समाधान (हमारा इलाका, हमारा समाधान) कार्यक्रम का अनावरण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार बंगाल के सभी 80,000 बूथों पर शिविर लगाएगी, जहां लोग टूटी सड़कों, पेयजल नलों की कमी, खराब स्ट्रीट लाइट या स्कूल की छतों से पानी टपकने जैसी स्थानीय नागरिक समस्याओं को उठा सकते हैं और मौके पर ही प्रशासनिक तंत्र के माध्यम से उनका समाधान करवा सकते हैं। यह कार्यक्रम दो अगस्त से शुरू होगा। मालूम हो कि एक दिसंबर, 2020 को ममता ने ग्राम पंचायत और नगरपालिका वार्ड स्तर पर आयोजित संपर्क शिविरों के माध्यम से लोगों के दरवाजे पर सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं के वितरण के लिए 'दुआरे सरकार' कार्यक्रम शुरू किया था। 'दुआरे सरकार' की तरह, इस नये कार्यक्रम को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उस समय भी, जब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को घेरने का प्रयास कर रही थी, सत्तारूढ़ दल ने बूथ स्तर पर कल्याण शिविरों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुंच बनाई थी।

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के श्याम मंदिर निर्माण की भूमि पूजन संपन्न

- तारकेश्वर मार्ग के विश्रामगृह में बनेगा भव्य मंदिर

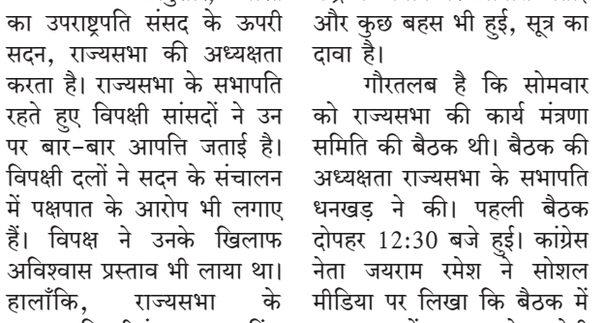

निज संवाददाता : श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति, तारकेश्वर मार्ग के विश्रामगृह में भव्य श्री श्याम मंदिर का निर्माण करने का निर्णय किया गया है। इसकी भूमि पूजन मुरारी लाल दीवान (चेयरमैन दीवान ग्रुप एवं समाजसेवी) के करकमलों द्वारा की गई। अध्यक्ष विवेक गुप्ता की देखरेख में कार्य पूरा किया गया। प्रधान सचिव बिमल दीवान, उपसचिव पवन बंसल एवं सुभाष सावलदावाला, एवं संयोजक मंदिर कमिटी के मनोज चौधरी की उपस्थिति में भूमि पूजन की गयी। इस मौके पर निरंजन कुमार अग्रवाल भी उपस्थित थे। मार्ग दर्शक एवं समाजसेवी राजकुमार बोथरा के दिशा अनुसार श्री श्याम मंदिर का कार्य किया जा रहा है। समिति के कार्यकर्ता दीपक अग्रवाल (चन्दन नगर), उमा शंकर जोशी, सौरव अग्रवाल, गोपाल अग्रवाल, विनोद चमरिया, पुनित कनोई, चेतन अग्रवाल, ब्रिजेश मिश्रा, सर्वेश मिश्रा, विजय गुप्ता, सुभाष चंद्र गोयनका, दुर्गाचंद अग्रवाल, महेश काबरा, जय प्रकाश गुप्ता, संजय अग्रवाल (नीम का थाना), विनोद अग्रवाल, शैलेन्द्र कुमार गुप्ता, सुमित झुनझुनवाला इत्यादि ने उपस्थित रहकर इस कार्य को सफल बनाया।

परिचर्चा का आयोजन

निज संवाददाता : गणित भावना पत्रिका के आठवें वर्ष के तीसरे अंक के प्रकाशन के अवसर पर पश्चिम बंगाल गणित परिषद ने बालीगंज सरकारी स्कूल में एक परिचर्चा सभा का आयोजन किया। इस अवसर पर आईआईटी के प्रोफेसर अशोक कृष्ण मल्लिक और आईएसआई के प्रोफेसर प्रदिष्ट बनर्जी ने अपने विचार रखे। पूर्व आईएएस अधिकारी और पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक कांता प्रसाद सिंह ने अपनी दो पुस्तकें 'लीलावती' और 'भास्कराचार्य का बीजगणित' पश्चिम बंगाल गणित परिषद के अध्यक्ष और गणित भावना पत्रिका के संपादक दीपक दा को सौंपी।

ममता पर लिखी दीपक घोष की किताब पर रोक

निज संवाददाता : बारासात कोर्ट ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर लिखी दीपक घोष की किताब ममता बनर्जी ऐज़ आई सॉ हर के किसी भी हिस्से के प्रकाशन, बिक्री और प्रसार पर रोक लगा दी है। यह मामला विधाननगर नगर निगम के वार्ड संख्या 20 के पार्षद प्रसेनजीत नाग ने दायर किया था। उनके आवेदन के आधार पर बारासात सिविल कोर्ट की जूनियर डिवीजन (प्रथम कोर्ट) की न्यायाधीश पॉलमी पंडित ने पिछले दिनों यह आदेश पारित किया। कोर्ट के आदेश के अनुसार, यह रोक 17 सितंबर तक प्रभावी रहेगी। नतीजतन, इस अवधि के दौरान, किताब का प्रकाशन, बिक्री, वितरण या किताब के किसी भी अंश या हिस्से को किसी भी सोशल मीडिया या कहीं और प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। यहां तक कि सोशल मीडिया पर पहले से प्रसारित हो चुके हिस्सों के प्रसार पर भी रोक लगा दी गई है। याचिकाकर्ता प्रसेनजीत नाग ने दावा किया कि किताब में कुछ विवादास्पद और भ्रामक जानकारी है, जो मुख्यमंत्री की छवि और निजी जीवन को प्रभावित कर सकती है। इसीलिए उन्होंने किताब के प्रकाशन और वितरण पर रोक लगाने की मांग करते हुए अदालत का दरवाजा खटखटाया। अदालत ने याचिका स्वीकार कर ली और अगली सुनवाई तक किसी भी प्रकाशन या वितरण पर रोक लगा दी। गौरतलब है कि दीपक घोष कभी तृणमूल कांग्रेस के करीबी माने जाते थे और लंबे समय तक राजनीति से जुड़े रहे। प्रकाशन ने दावा किया कि उनकी लिखी यह किताब मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से जुड़े विभिन्न अनुभवों और टिप्पणियों पर प्रकाश डालती है।

हावड़ा स्टेशन के 'जीरो माइल' पर चलेंगी लोकल ट्रेनें

- युद्धस्तर पर चल रहा 16 नंबर प्लेटफार्म का निर्माण कार्य
- दपूरे की 30 से 40 लोकल ट्रेनें उस स्टेशन से चल सकेंगी

निज संवाददाता : दक्षिण पूर्व रेलवे की लोकल ट्रेनों की आवाजाही को सुचारू बनाने के लिए हावड़ा स्टेशन पर ब्रिटिशकालीन जीरो माइल पर 16 नंबर प्लेटफार्म का निर्माण किया जा रहा है। माल परिवहन के लिए इस स्थान पर स्टेशन का निर्माण लगभग पूरा हो चुका है। अगर इस स्टेशन पर ट्रेन सेवाएं शुरू हो जाती हैं, तो दक्षिण पूर्व रेलवे के यात्रियों को काफी फायदा होगा। हावड़ा मेट्रो स्टेशन इस प्लेटफॉर्म के ठीक बगल में है। नतीजतन, दक्षिण पूर्व रेलवे के यात्री मेट्रो से सीधे कोलकाता पहुंच सकेंगे। हालांकि प्लेटफॉर्म का निर्माण तेजी से पूरा हो गया है, लेकिन तात्कालिक समस्या यह है कि प्लेटफॉर्म पर ट्रेनों के प्रवेश या निकास की स्थिति अभी भी अनुकूल नहीं है। इस स्टेशन पर मुख्य रूप से सिग्नल की समस्या है। हावड़ा के सीनियर डीओएम राजीव रंजन ने कहा कि इसके लिए यार्ड की थोड़ी सी रीमॉडलिंग करनी होगी। हालांकि, सिग्नल और दूरसंचार विभाग अब इस प्लेटफॉर्म पर प्रवेश और निकास का रास्ता तलाश रहा है। चूंकि यह अभी तक निश्चित नहीं है कि प्लेटफॉर्म को रूट रिले सिस्टम में कैसे लाया जाएगा, इसलिए परिचालन विभाग निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि यह कब चालू होगा।

राजीव रंजन के अनुसार, यदि प्लेटफॉर्म नंबर 16 को खोल दिया जाता है, तो दक्षिण पूर्व रेलवे की 30 से 40 लोकल ट्रेनें उस स्टेशन से चल सकेंगी। हालांकि, चूंकि प्लेटफॉर्म छोटा है, इसलिए लंबी दूरी की ट्रेनें वहां से नहीं चल सकती हैं। हालांकि, लंबी दूरी की ट्रेनों के लिए नए परिसर में प्लेटफॉर्म नंबर 24 का निर्माण किया जा रहा है। दुर्गापूजा से पहले उस प्लेटफॉर्म से ट्रेनें चलने की उम्मीद है। लगभग पंद्रह लंबी दूरी की ट्रेनें उस प्लेटफॉर्म से चल सकेंगी। हालांकि, इसके लिए शालीमार से हावड़ा तक कोई और लंबी दूरी की ट्रेन नहीं भेजी जाएगी। हावड़ा स्टेशन के शताब्दी समारोह के दौरान, हावड़ा के डीआरएम ने घोषणा की कि दक्षिण पूर्व रेलवे की लोकल ट्रेन आवाजाही की समस्या को हल करने के लिए अगले डेढ़ महीने के भीतर नया प्लेटफॉर्म नंबर 16 तैयार हो जाएगा। हालांकि, वरिष्ठ डीओएम ने कहा कि अभी यह निश्चित नहीं है कि यह कब शुरू होगा, लेकिन ऐसे तरीके ढूंढ़े जा रहे हैं, जिससे प्लेटफॉर्म को जल्द शुरू किया जा सके।

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति

उद्घाटन समारोह की झलकियां

1. समिति के विश्रामगृह का जिर्णाद्धार एवं श्रावण मेला उद्घाटन श्रीमान राजेशजी सोंथलिया के कर कमलों से किया गया। 2. समिति के विश्रामगृह मे सेनचुरी लेडीज़ पार्क उद्घाटन श्रीमती श्वेता शर्मा के कर कमलों से किया गया। 3. आरओ वाटर प्लांट का उद्घाटन श्री ललित प्रहलादका एवं श्री गोपाल अग्रवाल द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलित श्री एन के अग्रवाल ने किया।

4. समिति विश्राम गृह के उद्घाटन में आये हुये अतिथी एवं उद्योगपति एवं समाजसेवी। 5. जल वाहिनी गाड़ी का उद्घाटन श्री संजयजी हरलालका एवं श्री अंजनी जी धानुका के कर कमलों द्वारा किया गया। जल वाहिनी गाड़ी दानदाता श्री ललितजी प्रहलादका ने अपने माताजी एवं पिताजी की स्मृति में दिया। 6. समिति के विश्राम गृह में आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए समिति के अध्यक्ष श्री विवेकजी गुप्ता, प्रधान सचिव बिमल दीवान, सह सचिव पवन बंसल, सुभाष साँवलदावा एवं अन्य।

7. रोटी मशीन का उद्घाटन श्री सुशीलजी चौधरी के हाथ से किया गया। साथ में समिति के अध्यक्ष श्री विवेकजी गुप्ता, प्रधान सचिव बिमल दीवान,सह सचिव पवन बंसल, सुभाष साँवलदावा एवं अन्य। 8. समिति के विश्राम गृह में समिति के अध्यक्ष श्री विवेक गुप्ता निरिक्षण करते हुए । 9. उद्घाटन में आये पश्चिम बंगाल के माननीय मंत्री श्री बैचारामजी मन्ना, लोकल एम एस ए डॉ. कोरबी मन्ना, लोकल सरपंच, अध्यक्ष एवं समिति के अधिकारीगण।

10. समिति के विश्रामगृह कमरा न. 11 का उद्घाटन श्री विश्वनाथ झुनझुनवाला, श्री विवेक गुप्ता के कर कमलों से किया गया। 11. समिति के विश्रामगृह कमरा न.19 का उद्घाटन श्री बिमल बैगानी के कर कमलों से किया गया।12. समिति के प्रारागण में पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन श्री मान रतैनदर रमन एवं पीएफ(हबडा)के कमीनसर श्री मान सौरभ चौधरी का स्वागत करते समिति के अध्यक्ष विवेकजी गुप्ता एवं अन्य ।

पदाधिकारीगण

सभापति : विवेक गुप्ता

उपसभापति : कमला प्रसाद काजड़िया, शिव रतन गोयनका

प्रधान सचिव : बिमल दीवान

उपसचिव : पवन बंसल, सुभाष साँवलदावाला

मार्गदर्शक एवं मेला चेयरमैन : राजकुमार बोथरा

संपादकीय

नागरिकता प्रमाण पत्र को लेकर सबसे बड़ा विवाद

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक ढांचा है, जिसकी शक्ति निष्पक्ष चुनाव और जन-भागीदारी में निहित है। चुनाव आयोग इस व्यवस्था का आधार है, जो हर नागरिक के स्वतंत्र और स्वेच्छा से मतदान करने के अधिकार की रक्षा करता है। मगर इसकी कार्यप्रणाली पर ही अगर मतदाताओं को संशय होने लगे तो स्पष्टता की मांग स्वाभाविक है। बिहार में कुछ माह बाद विधानसभा चुनाव होने हैं और निर्वाचन आयोग ने वहां मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण शुरू किया है, जिसे लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। सबसे बड़ा विवाद आयोग की ओर से तय किए गए नागरिकता के प्रमाण पत्रों को लेकर है, जिनमें आधार और मतदाता पहचान पत्र मान्य नहीं बताया गया। इससे मतदाताओं में असंतोष पैदा हुआ। विपक्षी दल भी चुनाव आयोग के इस कदम का विरोध कर रहे हैं। विवाद इतना बढ़ा कि मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। याचिकाकर्ताओं की ओर से दी गई दलील के आधार पर शीर्ष अदालत को भी कहना पड़ा कि अगर विशेष गहन पुनरीक्षण में बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम हटाए जाते हैं, तो न्यायालय हस्तक्षेप करेगा। चुनाव आयोग के मुताबिक, इस प्रक्रिया के दौरान राज्य में पंजीकृत पैंसठ लाख लोगों ने गणना प्रपत्र जमा नहीं किए हैं, क्योंकि वे या तो मृत हैं या स्थायी रूप से कहीं और स्थानांतरित हो गए हैं। हालांकि, आयोग कह चुका है कि मतदाता सूचियों में बड़ी संख्या में फर्जी नामों का पंजीकरण है, जिसे दुरुस्त करना जरूरी है और यह प्रकिया देश भर में चलाई जाएगी। मगर सवाल इस प्रकिया के समय और बिहार से इसकी शुरूआत करने को लेकर भी है। विपक्षी दलों और कुछ सामाजिक संगठनों की दलील है कि चुनाव से ठीक पहले यह कदम उठाना अनुचित है। यहां गौर करने वाली बात यह है कि जो लोग किसी कारणवश अपनी नागरिकता का वैध दस्तावेज समय पर नहीं दे पाएंगे, वे मताधिकार से वंचित हो सकते हैं। शीर्ष अदालत ने इस मामले पर पहले सुझाव दिया था कि चुनाव आयोग को इस प्रकिया में नागरिकता प्रमाण पत्र के रूप में आधार, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड को भी शामिल करने पर विचार करना चाहिए। अब आयोग की दलील है कि वह पहचान के उद्देश्य से आधार और मतदाता पहचान पत्र का उपयोग कर रहा है, लेकिन ये दोनों नागरिकता का प्रमाण नहीं हैं और इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसे में यह सवाल उठना भी स्वाभाविक है कि जब किसी बैंक में खाता खुलवाने से लेकर रसोई गैस के लिए पंजीकरण के वास्ते आधार अनिवार्य है, तो वह नागरिकता की प्रमाणिकता के लिए वैध दस्तावेज क्यों नहीं है? मतदाता पहचान पत्र तो चुनाव आयोग की निगरानी में ही बनते हैं, फिर उन्हें भरोसे का दस्तावेज क्यों नहीं माना जा रहा? यह सच है कि देश में चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाए रखने के लिए मतदाता सूची में संशोधन की प्रक्रिया जरूरी है। मगर इस प्रक्रिया की जटिलता से कोई योग्य मतदाता मतदान के अधिकार से वंचित न हो।

संघ प्रमुख 75 में 'सेवानिवृत्ति' के पक्ष में, तो मोदी क्यों अपवाद!

भागवत के बयान से भारतीय राजनीति में शुरू हुआ नया विमर्श

अजय कुमार
(वरिष्ठ पत्रकार)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने हाल ही में नागपुर में एक पुस्तक विमोचन समारोह के दौरान तल्ख टिप्पणी की कि 75 वर्ष की आयु पूरी होने पर नेताओं को सेवानिवृत्त हो जाना चाहिए और नई पीढ़ी को अवसर देना चाहिए। यह बयान उन्होंने दिवंगत आरएसएस विचारक मोरोपंत पिंगले के हवाले से दिया, जिन्होंने कथित तौर पर कहा था कि 75 वर्ष की आयु में शॉल ओढ़ाए जाने का अर्थ है कि व्यक्ति को अब रुक जाना चाहिए और दूसरों को आगे आने देना चाहिए। भागवत का यह बयान, जो सामान्य प्रतीत होता है, ने भारतीय राजनीति में तीव्र चर्चा को जन्म दिया है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि यह बयान ऐसे समय में आया है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और स्वयं भागवत, दोनों सितंबर 2025 में 75 वर्ष के हो जाएंगे। इस बयान ने विपक्षी दलों को यह सवाल उठाने का अवसर दिया कि क्या यह टिप्पणी मोदी के लिए एक सूक्ष्म संदेश है या यह केवल एक सामान्य वैचारिक सिद्धांत की पुनरावृत्ति है।सबसे पहले बता दें भागवत का यह बयान कोई नया नहीं है। 2019 में भी उन्होंने इसी तरह की टिप्पणी की थी, लेकिन तब उन्होंने स्पष्ट किया था कि नरेंद्र मोदी इस नियम से अपवाद हैं, क्योंकि उनकी नेतृत्व क्षमता और प्रासंगिकता असाधारण है। इस बार, हालांकि, भागवत ने ऐसा कोई अपवाद स्पष्ट नहीं किया, जिससे यह सवाल उठता है कि क्या उनका दृष्टिकोण बदल गया है। यह बयान इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और आरएसएस के बीच संबंधों को लेकर चर्चा को हवा देता है। बीजेपी, जो आरएसएस की वैचारिक शाखा मानी जाती है में पहले भी 75 वर्ष की आयु सीमा का अनौपचारिक नियम रहा है, जिसके तहत लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और जसवंत सिंह जैसे वरिष्ठ नेताओं को सक्रिय राजनीति से हटाकर मार्गदर्शक मंडल में शामिल किया गया था। लेकिन नरेंद्र मोदी के मामले में इस नियम को लागू करने की संभावना पर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि उनकी लोकप्रियता, वैश्विक कद, और पार्टी पर पकड़ अभी भी मजबूत है।भागवत का यह बयान विपक्षी दलों के लिए एक सुनहरा अवसर बन गया है। कांग्रेस के नेता जयराम रमेश ने तंज कसते हुए कहा कि यह बयान मोदी के लिए एक घर वापसी का संदेश है, और शिवसेना (यूबीटी) के संजय राउत ने इसे सीधे तौर पर मोदी के लिए संदेश के रूप में व्याख्या की। राउत ने यह भी उल्लेख किया कि मोदी ने स्वयं

इस आयु सीमा के नियम को लागू किया था और अब यह देखना बाकी है कि क्या वह इसे स्वयं पर लागू करेंगे। आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल ने भी पिछले साल इस मुद्दे को उठाया था, जब उन्होंने भागवत को पत्र लिखकर पूछा था कि क्या वह बीजेपी के इस नियम से सहमत हैं, जिसके तहत 75 वर्ष से अधिक आयु के नेताओं को सेवानिवृत्त किया जाता है। विपक्ष की यह रणनीति स्पष्ट रूप से बीजेपी और आरएसएस के बीच संभावित मतभेदों को उजागर करने की कोशिश है, ताकि सत्तारूढ़ गठबंधन में दरार पैदा की जा सके।हालांकि, बीजेपी ने इस बयान को खारिज करते हुए कहा है कि पार्टी के संविधान में 75 वर्ष की आयु सीमा का कोई औपचारिक नियम नहीं है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मई 2023 में स्पष्ट किया था कि मोदी 2029 तक नेतृत्व करते रहेंगे और सेवानिवृत्ति की अफवाहों में कोई सच्चाई नहीं है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी इस दावे का खंडन किया कि भागवत का बयान मोदी के लिए था और इसे सामान्य टिप्पणी बताया। यह स्पष्ट है कि बीजेपी इस मुद्दे को दबाने की कोशिश कर रही है, क्योंकि मोदी की लोकप्रियता और नेतृत्व पार्टी के लिए अभी भी अपरिहार्य हैं।दूसरी ओर, भागवत का बयान स्वयं उनके लिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि वह भी 75 वर्ष के हो रहे हैं। आरएसएस में कोई औपचारिक सेवानिवृत्ति की आयु सीमा नहीं है और पिछले सरसंघचालकों ने तब तक पद संभाला, जब तक उनकी शारीरिक स्थिति अनुमति देती थी। उदाहरण के लिए, राज्जू भैया और के.एस. सुदर्शन ने 78 वर्ष की आयु में स्वास्थ्य कारणों से पद छोड़ा, जबकि बालासाहेब देवरस 79 वर्ष तक सरसंघचालक रहे। इस संदर्भ में, भागवत का बयान उनके अपने भविष्य के बारे में भी सवाल उठाता है। क्या वह स्वयं इस सिद्धांत का पालन करेंगे, या यह केवल एक वैचारिक टिप्पणी थी? आरएसएस के सूत्रों ने इस बयान को हल्का करने की कोशिश की है, यह कहते हुए कि यह केवल पिंगले के हास्यप्रिय स्वभाव को दर्शाने वाली कहानी थी, न कि कोई नीतिगत सुझाव।इस बयान का समय भी महत्वपूर्ण है। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब आरएसएस अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है और बीजेपी 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद अपनी स्थिति को मजबूत करने में जुटी है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि यह बयान आरएसएस और बीजेपी के बीच शक्ति संतुलन को लेकर एक सूक्ष्म संदेश हो सकता है। 2024 के चुनावों से पहले भी दोनों संगठनों के बीच कुछ तनाव की खबरें थीं, विशेष रूप से जब बीजेपी अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने कहा था कि बीजेपी को अब आरएसएस की जरूरत नहीं है। भागवत के इस बयान को कुछ लोग आरएसएस की वैचारिक प्रभुता को पुनः स्थापित करने की कोशिश के रूप में देख रहे हैं।इसके अलावा, यह बयान भारतीय राजनीति में नेतृत्व परिवर्तन और उत्तराधिकार के व्यापक सवाल को भी उठाता है। बीजेपी में मोदी के बाद नेतृत्व की दौड़ में अमित शाह, नितिन गडकरी, और देवेंद्र फडणवीस जैसे नाम उभर रहे हैं। भागवत का बयान, चाहे वह सामान्य हो या लक्षित, इस चर्चा को और हवा देता है कि क्या बीजेपी में अब एक नई पीढ़ी को तैयार करने का समय आ गया है। हालांकि, मोदी की वैश्विक छवि और पार्टी पर उनकी मजबूत पकड़ को देखते हुए, उनके सेवानिवृत्त होने की संभावना कम लगती है, जब तक कि वह स्वयं इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाते।लब्बोलुआब यह है कि मोहन भागवत का यह बयान एक साधारण वैचारिक टिप्पणी से कहीं अधिक है। यह न केवल बीजेपी और आरएसएस के बीच संबंधों की जटिलता को दर्शाता है, बल्कि भारतीय राजनीति में उम्र, नेतृत्व, और उत्तराधिकार जैसे मुद्दों पर भी प्रकाश डालता है। विपक्ष इसे एक अवसर के रूप में देख रहा है, जबकि बीजेपी इसे खारिज करने की कोशिश कर रही है। भागवत का यह बयान, चाहे वह सामान्य हो या लक्षित, भारतीय राजनीति में एक नए विमर्श को जन्म दे चुका है, और इसका प्रभाव आने वाले महीनों में और स्पष्ट होगा।

जानें अपना राशिफल

मेष
भाग्योदय वाला समय हो सकता है, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, किसी अन्य व्यक्ति से काम करने पर फायदा भी हो सकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है। मन शान्त रखें।

वृषभ
खुशियों भरा समय हो सकता है। इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा। अचानक धन लाभ भी हो सकता है, नौकरी करने वालों के लिए दिन अच्छा हो सकता है। मन प्रसन्न रहेगा।

मिथुन
शक्तिशाली समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें। जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन चंचल रहेगा। गहरे वस्त्र नहीं धारण करें।

कर्क
दमदार समय हो सकता है, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, कोई अधूरा काम पूरा हो सकता है। कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य आगे बढ़ सकता है। जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन प्रसन्न रहेगा।

सिंह
सतर्क रहकर काम करने वाला समय हो सकता है। कोई आपको नीचा दिखाने का प्रयास कर सकता है, सावधान रहें। किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है। मन वश में रखें। सफेद वस्त्र न धारण करें।

कन्या
रोजगार वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने की आवश्यकता है। किसी विदेश में काम करने पर विचार हो सकता है जो फायदेमंद होगा। परिवार के लोग पूरा साथ दे सकते हैं।

तुला
सम्मानित समय हो सकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है। किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें। अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, मन में उत्साह रहेगा।

वृश्चिक
कमजोर समय हो सकता है। शान्ति से दिन व्यतीत करने की आवश्यकता है। किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है। बिना काम बाहर नहीं जाएं घात हो सकता है, मन स्थिर रखें।

धनु
सामर्थ्यवान समय हो सकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है। कोई वाहन खरीदने का विचार हो सकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है प्रयास करें। मन में उत्साह रहेगा।

मकर
श्रेष्ठ समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा। किसी के साथ मिलकर विदेश में काम करने पर विचार हो सकता है जो सफल रहेगा। आपसी प्रेम बनाये रखें।

कुंभ
भविष्य तय होने वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। कोई आपका समय खराब करने का प्रयास कर सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखें। मन शान्त रखें।

मीन
किसी नये काम की शुरुआत करने वाला समय हो सकता है। कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें। अपनी बुद्धिमानी से काम करने की आवश्यकता है, मन में उत्साह रहेगा।

दो विद्वानों की कहानी

एक समय की बात है, एक गांव में एक गुरु रहते थे जिन्हें खबर हो गई कि एक अन्य नगर में एक और विद्वान आये हुए हैं। वे अद्भुत ज्ञान के मालिक थे और आगे बढ़ने के लिए सबकी सहायता कर सकते थे। ये खबर सभी को बहुत पसंद आई और सभी लोग उस नगर में उनसे मिलने के लिए जूझने लगे।

इन दो विद्वानों की राजया को पता चलते ही वहां का राजा उनसे बात करने के लिए अपने दरबार में बुला ले आये। राजा ने दोनों विद्वानों से अपने राज्य में ज्ञान का प्रचार करने का आग्रह किया। दोनों विद्वान ने राजा के आह्वान को स्वीकार किया और उन्होंने राजा के सामने आगे जाकर कहा, ''आपके सामर्थ्य के लिए हमें गर्व महसूस हो रहा है, महाराज। हम आपकी सेवा में हमारा सर्वोच्च कर्तव्य मानने के लिए तत्पर हैं।''

राजा ने खुशी से भरे होंठों से कहा, 'तुम्हारे सामान्य भाषा में जनता को समझाओ।' पहले विद्वान मुस्काते हुए बोले, 'अच्छा महाराज, हम आपके राज्य के राजा और

प्रजा के बीच बातचीत को सुगम बना सकते हैं।'

राजा ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा, 'मुझे बिल्कुल आश्चर्य हो रहा है कि तुम कैसे कर सकते हो। ये तो मेरे लिए।'

दूसरे विद्वान ने मुस्काते हुए कहा, 'महाराज, हम आपके राज्य के लोगों को सामग्री के बिना खाने का ज्ञान दे सकते हैं।' राजा ने बहुत ही आश्चर्यचकितता से कहा, ''मैं ये सचमुच मानने में सक्षम नहीं हूँ! कृपया मुझे बताओ, तुम इस बात को कैसे सम्भव कर सकते हो?'

पहले विद्वान ने कहा, ''महाराज, हम विज्ञान का उपयोग करके एक ऐसा उपकरण बना सकते हैं जिससे हम राजा की मर्यादा के साथ बातचीत कर सकते हैं। यह उपकरण हमारे बहुत सारे प्रयोगों को सुलभ बना सकता है और आपके ग्रामीणों के बीच सामर्थ्य का निर्माण कर सकता है।' दूसरे विद्वान ने कहा, ''महाराज, हम खाना खाने की जरूरत के बिना एक ऐसा प्रयोग बना सकते हैं जिससे खाने की जगह नहीं होती हैं। यह उपकरण आपके लोगों के लिए आरामदायक और स्वास्थ्यप्रद होगा।'

ये सब सुनकर राजा बहुत प्रभावित हो गए और उन्होंने दोनों विद्वानों का स्वागत किया और अपने राज्य में इन उपकरणों का प्रचार कार्य करने के लिए उन्हें सौभाग्य दिया। दोनों विद्वान ने राजा की प्रशंसा करते हुए उनकी सेवा में खुशीपूर्वक काम किया और सभी लोग उन्हें प्रमाणित करते थे।0इस कहानी से हमें यह सिखाया जाता है कि समय के साथ ज्ञान विकसित हो रहा है और बहुत से अद्भुत आविष्कार हमारी मदद कर सकते हैं। दो विद्वानों के उदारता, समर्पण और सेवाभाव की मिसाल हमें ये बताती है कि हमें हमारे ज्ञान और कौशल को समाज की सेवा में लगाना चाहिए।

मार लो मुस्की

पापा- सोनू क्या बात है तेरी मम्मी आज इतनी चुप-चाप क्यों बैठी है?

सोनू- बस ऐसे ही पापा, मम्मी ने मुझसे लिपस्टिक मांगी थी तो मैंने गलती से फेवीस्टिक दे दी

पापा (हंसते हुए)- जुग-जुग जिओ मेरे लाल, भगवान सभी को ऐसा ही बेटा दे....

⏩⏩⏩⏩⏩

सास (दामाद से)- जिम जाया करो, खा-खाकर पेट निकल आया है

पति- पेट तो आपकी बेटी का भी निकल आया है

सास- वो तो मां बनने वाली है

दामाद- तो मैं भी तो बाप बनने वाला हूं

सास ने अपना सिर पकड़ लिया.....

⏩⏩⏩⏩⏩

टीचर- अगर कोई स्कूल के सामने बम रख जाए, तो तुम क्या करोगे?

छात्र- एक-दो घंटे देखेंगे, अगर कोई ले जाता है, तो ठीक है,

वरना स्टाफ रूम में रख देंगे....

चिंटू जंगल में जा रहा था, अचानक भालू देखकर सांस रोककर जमीन पर लेट गया

ये देखकर भालू आया और चिंटू के कान में बोला- भूख नहीं है, वरना तेरी सारी होशियारी निकाल देता.....

⏩⏩⏩⏩⏩

लड़की- पंजाब एक्सप्रेस कब आएगी?

टीटी- पांच बजे

लड़की- लोकल?

टीटी- नौ बजे

लड़की- मालगाड़ी?

टीटी- एक बजे, पर आपको जाना कहां है?

लड़की- कहीं नहीं, बस पटरी पर लेटकर सेल्फी लेनी थी

टीटी बेहोश.....

⏩⏩⏩⏩⏩

अकबर और बीरबल

एक बार अकबर और बीरबल शिकार करने जा रहे थे, शिकार करते समय अकबर के दायें हाथ का अँगूठा तलवार निकलते समय कट जाता हैं और वह अपने सिपाहियों से बोलता हैं, जाओ किसी वैद्य को बुला कर लाओ। फिर अकबर बीरबल को बुलाता हैं और बोलता हैं कि,''देखो ये क्या हो गया मेरे साथ मेरी हालत तो देखो, बीरबल ने बोला ''महाराज जो भी होता हैं, अच्छे के लिए होता हैं।''अकबर को गुस्सा आ जाता हैं और अपने सिपाहियों को बोलता हैं ''वैद्य को बाद में बुलाना, पहले इसको ले जाओ, इसे उल्टा लटका के कोड़े मारो और सुबह इसे फांसी दे देना''। इसके बाद अकबर अकेले शिकार पर चला जाता हैं। कुछ आदिवासी उसे पकड़ लेते हैं और उसकी बलि चढ़ाने के लिए उल्टा लटका देते हैं। उसके बाद सभी आदिवासी डांस करने लगते हैं, तभी एक आदिवासी की नजर उसके कटे अंगूठे पर पड़ती हैं। वह बोलता हैं यह तो अशुद्ध हैं। हम इसकी बलि नहीं चढ़ा सकते, इसको छोड़ दो। अकबर को बीरबल की याद आती हैं और वह सोचता हैं अब तक बीरबल को फांसी दे दी गयी होगी। वह तेजी से भागता हुआ आता हैं, और देखता हैं तो बीरबल को फांसी होने ही वाली थी। वह बीरबल के पास जाता हैं और उसको सारी बात बताता हैं और रोने लगता हैं। बीरबल बोलता हैं महराज जो भी होता हैं, अच्छे के लिए होता हैं, फिर से अकबर झुँझला उठा और पूछा इसमें अच्छा क्या है, बीरबल ने बोला महाराज अगर मैं आपके साथ गया होता तो वे लोग मुझे फांसी पर चढ़ा देते।

नैतिक सीख: जो होता हैं अच्छे के लिए होता हैं, परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए।

जेबकतरा

मुकद्दमा बहुत मामूली था। अदालत में कोई भीड़-भाड़ भी नहीं। दो-एक वकील, तीन-चार पुलिस वाले। अदालत के कारिंदे। एक चपरासी और जेबकतरा। जुर्म भी संगीन नहीं था। मजिस्ट्रेट ने सजा सुनाई-एक साल की सजा या एक हजार रुपया जुर्माना! क्या मंजूर है तुम्हें?

जेबकतरा-हुजूर, जुर्माना!

मजिस्ट्रेट-ठीक है। जाके जुर्माना खजाने में जमा करो और रसीद लाकर अदालत में पेश करो।

जेबकतरा-हुजूर! एक घण्टे की मोहलत दे दी जाए।

मजिस्ट्रेट-क्यों?

जेबकतरा-हुजूर! इतना वक्त तो लग ही जाएगा...

मजिस्ट्रेट-ठीक है....ठीक है...मुंशी जी, अगला केस।

जब तक दो-तीन मुकदमों की पेशियाँ हुई तब तक जेबकतरे ने आकर खजाने की रसीद पेश कर दी। उसे रिहा कर दिया गया। वह अदालत को सलाम करके चल दिया। जाते-जाते बन्द मुट्ठी से उसने उस पुलिस वाले को कुछ थमाया जो उसे पेशी पर लाया था। एक मरियल से वकील ने भीड़ में गुम होते जेबकतरे की तरफ से नजरें घुमाकर मजिस्ट्रेट को देखा। मजिस्ट्रेट ने वकील को बताया-ठीक है...जब पुलिस पकड़ के लाएगी, तो फिर सजा दे दूँगा!

माथापच्ची-8

			5	8	1	4	3	
	5		2	4				6
	1	2						
9		8			4			
			8	1	6			
			9			7		5
						6	2	
7				9	2		1	
	9	1	4	6	5			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 7 का हल

6	7	2	9	4	8	5	3	1
8	1	9	5	6	3	2	4	7
4	3	5	2	1	7	9	6	8
9	4	7	8	2	5	6	1	3
3	2	6	4	7	1	8	9	5
5	8	1	6	3	9	7	2	4
1	9	8	3	5	6	4	7	2
7	6	4	1	8	2	3	5	9
2	5	3	7	9	4	1	8	6

बड़ा फर्क ला सकता है बीमा फॉर्म का एक छोटा सवाल

स्वास्थ्य बीमा सलाह

रोहित मित्तल
(उपाध्यक्ष–स्वास्थ्य बीमा)

अगर आप बीमा इंडस्ट्री में काम करते हैं, आपके पास पहले से कोई हेल्थ या टर्म बीमा पॉलिसी है, या आप पॉलिसी खरीदने की सोच रहे हैं तो ये लेख ज़रूर पढ़िए।

बीमा की दुनिया में छोटी बातें भी बहुत मायने रखती हैं। कई बार तो बस एक छोटा सा सवाल, जो फॉर्म में आख़िर में पूछा जाता है पूरी पॉलिसी और आपके दावे (क्लेम) की किस्मत तय कर देता है।

वो सवाल क्या है?

'क्या कोई और बीमारी या समस्या है, जिसका आपने ऊपर ज़िक्र नहीं किया?' यह सवाल दिखने में तो सीधा–सादा लगता है, लेकिन इसका असर बहुत बड़ा हो सकता है। अगर आपने इसका जवाब ठीक से नहीं दिया, तो आगे चलकर बीमा क्लेम रिजेक्ट हो सकता है।

इसमें परेशानी कहां है?

फॉर्म में बाकी सवाल तो साफ–साफ होते हैं– जैसे 'क्या आपको डायबिटीज है?' या 'क्या आपने कोई ऑपरेशन कराया है? लेकिन ये आख़िरी वाला सवाल खुला हुआ होता है। मतलब, इसमें बीमा कंपनी आप पर भरोसा करती है कि आप खुद तय करेंगे क्या ज़रूरी जानकारी है। लोग कई बार सोचते हैं कि–'ये तो छोटा–मोटा था, बताने की क्या ज़रूरत?' 'अगर बीमा कंपनी को ज़रूरी लगता, तो वो खुद पूछती।' लेकिन यहीं गलती हो जाती है।

ऐसे कुछ मामले, जिन्हें लोग अक्सर भूल जाते हैं :

1. पीठ दर्द जो सालों से चल रहा है
2. कोई स्कैन कराया था, पर आगे टेस्ट या इलाज नहीं कराया
3. डॉक्टर ने कोई दवा लिखी, पर आपने नहीं ली
4. अगर ये बातें आपको पता थीं और आपने फिर भी नहीं बताईं, तो बीमा कंपनी इसे छुपाई गई जानकारी मान सकती है और वह आपका क्लेम रिजेक्ट कर सकती है।

क्या किया जाए ताकि दिक्कत न हो? इसका हल बहुत आसान है, बस थोड़ी सावधानी रखें :

1. जो भी जानकारी हो, ईमानदारी से बताएं छोटी हो या बड़ी, हर बीमारी या परेशानी का ज़िक्र करें।

2. अपने द्वारा दी गई जानकारी का रिकॉर्ड रखें। अगर आपने कोई मेडिकल जानकारी दी है, तो उसका ईमेल, फोटो या स्क्रीनशॉट रखें। यह काम बाद में बहुत मदद करता है।

3. मोरेटोरियम क्लॉज़ को समझें

कई पॉलिसियों में यह नियम होता है कि अगर आपने 5 साल तक कोई गलत जानकारी नहीं दी और कोई क्लेम नहीं किया, तो बीमा कंपनी पुरानी बीमारियों पर सवाल नहीं उठा सकती। लेकिन ये फायदा तभी मिलेगा जब शुरू से सब कुछ सच–सच बताया गया हो। बीमा का असली मकसद सिर्फ पैसा नहीं, शांति और भरोसा है। बीमा इसीलिए होता है कि जब ज़रूरत पड़े, तो वह आपके साथ खड़ा हो। लेकिन अगर जानकारी में गलती या कमी हो, तो वही बीमा आपको समय पर मदद नहीं कर पाएगा। इसलिए बीमा लेने के साथ–साथ यह भी जरूरी है कि आप सब कुछ सही और साफ़ तरीके से बताएं।

बीमा एजेंट्स और इंडस्ट्री वालों के लिए :

सिर्फ़ प्रीमियम या बेनेफिट्स मत समझाइए। अपने ग्राहकों को यह भी बताइए कि सही जानकारी देना क्यों ज़रूरी है।

पॉलिसी लेने वालों के लिए :

अपनी पॉलिसी और दिए गए डॉक्युमेंट्स को एक बार ज़रूर फिर से पढ़िए। कोई मेडिकल जानकारी छूटी हो तो तुरंत अपडेट कराइए। यह एक छोटा कदम है, जो आपके परिवार की सुरक्षा में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है।

अंत में बस यही कहना है कि बीमा फॉर्म का वो आखिरी और छोटा–सा सवाल 'कोई और बीमारी या समस्या है?' शायद वही सबसे अहम सवाल होता है। लब्बोलुआब यह कि–**सही जानकारी = सही सुरक्षा। बीमा में भी और ज़िंदगी में भी। ईमानदारी और स्पष्टता ही सबसे बड़ी ताकत है।**

माँ शाकम्भरी सिंधारा व झूलन महोत्सव का भव्य आयोजन

कुमारी कन्याओं का पूजन विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया

निज संवाददाता : हरियाली तीज के पावन पर्व पर श्री शाकम्भरी सेवा ट्रस्ट एवं श्री शाकम्भरी भक्त मंडल, कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में माँ शाकम्भरी सिंधारा एवं झूलन महोत्सव का भव्य आयोजन बिधान गार्डन में श्रद्धा, संस्कृति और भक्ति के अनुपम संगम के रूप में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन न केवल सावन मास की हरियाली तीज का उत्सव था, बल्कि माँ शाकम्भरी की दिव्य उपासना के माध्यम से प्रकृति, नारी शक्ति और अन्नवनस्पति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का आध्यात्मिक प्रयत्न भी था।माँ शाकम्भरी देवी दुर्गा का वह करुणामयी रूप हैं, जिन्होंने अपने सौ नेत्रों से पृथ्वी की पीड़ा को देखकर उसे अन्न, फल–फूल और वनस्पतियों से संजीवनी दी। उन्हें साताक्षी भी कहा जाता है। माँ की आराधना से न केवल घर में सुख–शांति आती है, बल्कि आरोग्यता और समृद्धि भी प्राप्त होती है।महोत्सव का शुभारंभ माँ शाकम्भरी के आह्वान एवं पावन दुर्गा सप्तशती पाठ से हुआ, जिसने सम्पूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इसके पश्चात कुमारी कन्याओं का पूजन विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया, जो मातृशक्ति के सम्मान और सांस्कृतिक मूल्यबोध का प्रतीक बना। माँ शाकम्भरी के दिव्य श्रृंगार के दर्शन इस आयोजन का विशेष आकर्षण बने, जिसमें ऋतु पुष्पों, पारंपरिक आभूषणों एवं लोक–श्रृंगार से सजी माँ की प्रतिमा ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। माँ के हिंडोले के दर्शन ने भक्तों को अलौकिक और निर्मल आनंद की अनुभूति कराई।इसके पश्चात भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें प्रसिद्ध भजन गायक सौरव मधुकर व उनकी टीम ने माँ की महिमा का ऐसा भावपूर्ण और कर्णप्रिय गायन प्रस्तुत किया कि श्रोतागण देर तक भक्ति रस की गंगा में निमग्न हो गए। शाकम्भरी भक्त मण्डल के सदस्यों व अन्य के द्वारा गाये गये दरबार प्यारो लागे रे... हे मैया हे मैया दरबार प्यारो लागे रे, श्रृंगार प्यारो लागे रे... मैया जी थारा झूला शतरंगी... बैठी हो मां सामने कर सोलह श्रृंगार, शाकम्भरी मैया को ध्यावो रे बेड़ा पार करेगी..., मेरे मैया से जिसका संबंध है उसके घर में आनंद ही आनंद है इन भजनों को खूब वाहवाही मिली। सौरव मधुकर द्वारा प्रस्तुत मंगल पाठ स्तवण, झूमते हुए चुनरी एवं गजरा महोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं में ऐसा भावातिरेक उत्पन्न हुआ कि अनेक श्रोताओं की आँखों से अश्रुधारा बहती दिखी।इसके पश्चात प्रस्तुत नृत्यनाटिका शाकम्भरी मंगल स्तुति'' ने भक्तों के मन को आध्यात्मिक भावों से भर दिया। माँ के प्रति अगाध श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए चुनरी अर्पण और गजरा श्रृंगार कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालु सम्मिलित हुए और माँ को भक्ति भाव से सजाया। महोत्सव के अंत में छप्पन भोग का विशेष अर्पण कर माँ को नमन किया गया, जिसके पश्चात महाभोग प्रसाद का वितरण किया गया। महोत्सव के संयोजक अशोक ढेडिया ने बताया कि यह आयोजन केवल धार्मिक आस्था का उत्सव नहीं, बल्कि संस्कृति, समाज और प्रकृति के प्रति हमारी सामूहिक जिम्मेदारी और श्रद्धा की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। यह महोत्सव माँ शाकम्भरी की कृपा के साथ–साथ संस्कृति, स्त्री–सम्मान और प्रकृति के संरक्षण की भावना को सहेजने वाला पुण्य–पर्व बनकर उभरा। कार्यक्रम को सफल बनाने में शाकम्भरी सेवा ट्रस्ट के सदस्य गण बजरंगलालजी बजाज , विष्णुजी अग्रवाल, प्रकास रामरयाका, पवन सुल्तानिआ, संदीप भौतिक, समीर सोंथालिया, सुरेश ढाँढारिया एवं मंडल के सभी सदस्य सक्रिय रहे।

जयंती पर याद किए गए प्रभाष जोशी

निज संवाददाता : बीते 15 जुलाई को प्रख्यात पत्रकार प्रभाष जोशी की जयंती के अवसर पर गांधी संग्रहालय पटना में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर 'प्रभाष जोशी का पत्रकारीय योगदान और बिहार से उनका जुड़ाव' विषय पर बोलते हुए जानेमाने गांधीवादी डॉ. रजी अहमद ने गांधी संग्रहालय से प्रभाष जोशी के साथ संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रभाष जोशी ने सदा गांधी संग्रहालय को बिहार में अपना घर समझा। उन्होंने कहा–मैं दिल्ली जाने पर हर बार उनके घर में खाना खाता था। मुझे इस बात का सब दिन अफसोस रहेगा कि प्रभाष जी अपने जीवन की आखिरी यात्रा में आयोजकों के दबाव की वजह से पटना संग्रहालय की बजाय होटल मौर्या में रुके थे। आज बाजारवाद के दौर में हमारी मजबूरी है कि पत्रकारिता और आने वाली नस्ल को बचाने के लिए प्रभाष जोशी को याद किया जाए। सभा की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ समाजवादी नेता शिवानंद तिवारी ने कहा कि मेरा प्रभाष जी से 1974 से जो रिश्ता जुड़ा वह ताउम्र कायम रहा। जब वे एकबारी के सोना टोला में हुई नक्सलबाड़ी हिंसा के बाद बिहार आए थे। प्रभाष जोशी, अजीत भट्टाचार्य और सुमन दुबे को साथ लेकर मैं सोना टोला गया था। जनसत्ता की योजना प्रभाष जी ने जेपी और गोयनका के साथ मिलकर बनाई थी। जनसत्ता अखबार नहीं, एक आंदोलन था। जिसमें प्रभाष जोशी ने सफलता हासिल की। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार मणिकांत ठाकुर ने कहा कि जिन पत्रकारों को मैंने बड़े पत्रकारों के रूप में देखा, उनमें मैंने प्रभाष जोशी को शिखर पत्रकार के रूप में स्वीकार किया है। मैं उनसे लगातार प्रेरित होता रहा और उनके प्रति नतमस्तक रहा। प्रभाष जी ने पत्रकारिता की नई भाषा को विकसित किया और पत्रकारों की एक पीढ़ी को अपने हाथों से गढ़ा। कवि–लेखिका मीरा मिश्रा ने प्रभाष जोशी और जनसत्ता को एक दूसरे का पूरक बताते हुए कहा कि इमरजेंसी के दरम्यान प्रभाष जी की भूमिका की चर्चा सुनती रही थी। प्रभाष जी के नेतृत्व में जनसत्ता को मैंने जनता की सत्ता के रूप में महसूस किया। बिहार विधान परिषद के उपसभापति डॉ. रामवचन राय ने कहा कि प्रभाष जी बहुत बड़े हृदय वाले संपादक थे। उन्हें किसी विचारधारा में बांधना मुमकिन नहीं है। प्रभाष जोशी जी का मूल्यांकन करते हुए लोगबाग 'नामवर निमित्त' को क्यों भूल रहे हैं। 'नामवर निमित्त' कार्यक्रम में मैं भी वक्ता था लेकिन यह समझने वाली बात है कि प्रभाष जी ने नामवर सिंह के 75 वर्ष पूरा होने पर 'नामवर निमित्त' की परिकल्पना क्यों की थी। इस आयोजन में सहयोग के लिए प्रभाष जी मुझे जिस तरह से संदेश भेजा, मैं उस सम्मानजनक संवाद को कभी भूल नहीं सकता हूं। मैं उन्हें देशज पत्रकारिता का प्रतिनिधि संपादक मानता हूं। जगजीवन राम संसदीय अध्ययन संस्थान के पूर्व निदेशक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्रीकांत ने कहा कि प्रभाष जोशी ने किस तरह हमारी तरह के अनजान पत्रकारों को आगे बढ़ाया। गांधी संग्रहालय के द्वारा आयोजित इस प्रभाष जयंती सम्मान का मुख्य आकर्षण कोलकाता से पधारे वरिष्ठ पत्रकार गंगा प्रसाद जी का सम्मान कार्यक्रम था। बीबीसी रेडियो के पत्रकार मणिकांत ठाकुर,वरिष्ठ पत्रकार श्रीकांत, गांधी अध्ययन के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर विजय कुमार और जेपी आंदोलन की सिपाही कंचनबाला ने बिहार के वरिष्ठ पत्रकारों की ओर गंगा प्रसाद को शॉल भेंट कर सम्मानित किया। गंगा प्रसाद जी के सम्मान के बारे में आयोजन का संचालन करते हुए पुष्पराज ने कहा कि गंगा प्रसाद जी का यह सम्मान प्रभाष जी की विरासत का सम्मान है। आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापन गांधी संग्रहालय पटना के संस्थापक डॉ. रजी अहमद ने किया।

अखिलेश का 2027 के लिये सोशल इंजीनियरिंग फार्मूला

ओबीसी समुदायों को टिकट दे सामाजिक समीकरण को संतुलित करने की कोशिश

अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

समाजवादी पार्टी के प्रमुख और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, प्रदेश की राजनीति में एक प्रमुख चेहरा हैं। पार्टी की ताकत का एक प्रमुख आधार उसका पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फॉर्मूला है। अखिलेश ने इस रणनीति को 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रभावी ढंग से लागू किया, जहां उन्होंने गैर–यादव ओबीसी, दलित और मुस्लिम मतदाताओं को एकजुट करने में सफलता हासिल की। इस रणनीति ने उन्हें उत्तर प्रदेश में 37 लोकसभा सीटें दिलाईं, जो उनकी अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। गैर–यादव ओबीसी समुदायों, जैसे कुर्मी, राजभर, और लोधी, को टिकट देकर उन्होंने सामाजिक समीकरण को संतुलित करने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, कुर्मी और पटेल समुदायों को 10 टिकट दिए गए, जिनमें से सात पर जीत हासिल हुई। यह दर्शाता है कि अखिलेश ने गैर–यादव ओबीसी वोट बैंक को साधने में सफलता पाई है। इस रणनीति को और मजबूत करने के लिए अखिलेश ने छोटे–मझोले नेताओं को पार्टी में शामिल किया, जैसे महेंद्र राजभर, जिनका प्रभाव घोसी, बलिया, और गाजीपुर जैसे क्षेत्रों में है। इस तरह की सामाजिक इंजीनियरिंग 2027 में भी उनके लिए महत्वपूर्ण होगी। उधर, दलित वोट बैंक को आकर्षित करना अखिलेश की रणनीति का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। समाजवादी पार्टी ने परंपरागत रूप से बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के दलित वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश की है। इसके लिए उन्होंने 2021 में समाजवादी बाबा साहेब वाहिनी का गठन किया, जिसका नेतृत्व बसपा से आए मिठाई लाल भारती को सौंपा गया। यह कदम दलित मतदाताओं, खासकर गैर–जाटव दलितों, को अपनी ओर खींचने की रणनीति का हिस्सा था। अखिलेश ने आंबेडकर जयंती जैसे अवसरों का उपयोग कर संदेश दिया कि उनकी पार्टी संविधान और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध है। 2024 के चुनावों में इस रणनीति का असर दिखा, जब दलित प्रत्याशियों को टिकट देकर सपा ने बसपा के वोट बैंक में सेंध लगाई। उदाहरण के लिए, इंद्रजीत सरोज जैसे नेताओं को पार्टी में शामिल कर और उन्हें प्रमुख जिम्मेदारियां देकर अखिलेश ने दलित समुदाय को यह संदेश दिया

शेष पेज–7 पर

वोटर कार्ड, आधार कार्ड या पैन कार्ड भारत की नागरिकता का प्रमाण नहीं

♦ सुप्रीम कोर्ट में चुनाव आयोग ने किया स्पष्ट

निज संवाददाता : वोटर कार्ड, आधार कार्ड या पैन कार्डक्या ये तीनों दस्तावेज़ भारत की नागरिकता का प्रमाण हो सकते हैं? सुप्रीम कोर्ट में चल रहे एक मामले की सुनवाई के दौरान यह सवाल उठते ही चुनाव आयोग की ओर से स्पष्ट रूप से कहा गया कि इन दस्तावेज़ों को भारतीय नागरिकता का अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता।शीर्ष अदालत ने अपने अवलोकन में कहा–''जिस व्यक्ति के पास वोटर कार्ड, आधार और पैन कार्ड है, उसकी नागरिकता पर सवाल उठाना कितना उचित?'' लेकिन इस टिप्पणी का विरोध करते हुए चुनाव आयोग ने कहा–ये तीनों दस्तावेज़ केवल विशेष सेवाओं के लिए दिए जाते हैं। इनका उद्देश्य नागरिकता की पुष्टि करना नहीं है।' चुनाव आयोग के अनुसार–वोटर कार्ड मतदान का अधिकार उपयोग करने के लिए, आधार कार्ड वर्तमान निवास का प्रमाण देने के लिए और पैन कार्ड आयकर संबंधित प्रक्रियाओं के लिए जारी किया जाता है। लेकिन इन दस्तावेज़ों में से किसी में भी नागरिकता की पुष्टि या सत्यापन नहीं होता। इसलिए आयोग का कहना है कि इन्हें नागरिकता का प्रमाण नहीं माना जा सकता।इस बयान के बाद राजनीतिक हलकों में नई बहस शुरू हो गई है। विपक्षी दलों का मानना है कि नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), एनआरसी या मतदाता सूची से जुड़ी भविष्य की नीतियों में यह टिप्पणी अहम भूमिका निभा सकती है। अब उम्मीद की जा रही है कि सुप्रीम कोर्ट अगली सुनवाई में इस मुद्दे पर अंतिम फैसला सुना सकता है।

गिरा दिया गया बांग्लादेश में महान फिल्मकार सत्यजीत रे का घर

भाजपा व तृणमूल ने किया विरोध

निज संवाददाता : बांग्लादेश में भारतीय फिल्ममेकर सत्यजीत रे का घर गिरा दिया गया है। सत्यजीत रे का यह घर बांग्लादेश में मैमनसिंह शहर में मौजूद था। इसे पहले मैमनसिंह शिशु अकादमी के नाम से जाना जाता था। भारत इस इमारत को संरक्षित करना चाहता था। इसी के चलते भारत ने इमारत की मरम्मत और पुनर्निर्माण की बांग्लादेश को पेशकश भी की थी। इस इमारत को संरक्षित करने के लिए कहा था। लेकिन, इसके बावजूद भी फिल्ममेकर का पैतृक घर गिरा दिया गया है।प्रख्यात साहित्यकार उपेंद्र किशोर रे चौधरी, प्रसिद्ध कवि सुकुमार रे के पिता और फिल्म निर्माता सत्यजीत रे के दादा थे, जो इसी घर में रहते थे।

अब इस इमारत को गिरा दिया गया है। फिल्ममेकर सत्यजीत रे के घर की मरम्मत और पुनर्निर्माण में सहयोग करने की भारत ने पेशकश की थी। 100 साल पुरानी इस इमारत पर लंबे समय से ध्यान नहीं दिया गया है, इसी के चलते इसकी हालत खराब हो गई है। भारत ने इसकी मरम्मत और पुनर्निर्माण करने की पेशकश की थी। इस मामले में विदेश मंत्रालय ने कहा था कि यह अफसोसनाक है कि मैमनसिंह में वो संपत्ति, जो कभी फिल्ममेकर रे के दादा की थी उसको ध्वस्त किया जा रहा है।गौरतलब है कि इस इमारत को बचाने के लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का भी पोस्ट सामने आया था। इसी के बाद अब जब घर गिरा जा चुका है तो इसी को लेकर टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी का बयान सामने आया है। अभिषेक बनर्जी ने कहा, मुझे यह जानकर बेहद दुख हुआ है कि ऑस्कर विजेता फिल्ममेकर सत्यजीत रे का ढाका में मौजूद पैतृक घर को कथित तौर पर बांग्लादेशी अधिकारी ध्वस्त कर रहे हैं। यह 100 साल पुरानी संपत्ति रे के दादा, उपेंद्रकिशोर रे चौधरी की थी, जो बंगाली साहित्य और संस्कृति के एक दिग्गज थे।उन्होंने आगे कहा, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नजर से यह बेहद जरूरी स्थल था जिसको खंडहर में तब्दील करना हमारी विरासत पर एक आघात से कम नहीं है। यह वैश्विक कला में रे परिवार के योगदान को मिटाने जैसा है।टीएमसी नेता ने कहा–मैं बांग्लादेश सरकार से आग्रह करता हूं कि वो इस कठोर निर्णय पर पुनर्विचार करें।

इस सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा एवं संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाए। मैं भारत सरकार से भी आग्रह करता हूं कि वह उचित द्विपक्षीय सहयोग शुरू करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बंगाल के सांस्कृतिक इतिहास की यह धरोहर विध्वंस के कारण नष्ट न हो।इधर, सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर बीजेपी के आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने इसको लेकर पोस्ट किया। उन्होंने कहा, बंगाली विरासत को एक और झटकासत्यजीत रे का पैतृक घर बांग्लादेश में ध्वस्त कर दिया गया। यह सिर्फ एक पुरानी संरचना का विनाश नहीं है यह इतिहास को मिटाना है।जिस मिट्टी ने दुनिया के महानतम सिनेमाई फिल्ममेकर में से एक को बढ़ा किया, वह अब मलबे में बदल गई है। क्या बांग्लादेश सरकार को ऐसे विशाल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य वाले स्थल को संरक्षित करने की जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए थी?दूसरी तरफ देखें तो बांग्लादेशी मीडिया की रिपोर्टों में कहा गया है कि मैमनसिंह में स्थित एक सदी पुरानी संरचना को नई इमारत बनाने के लिए ध्वस्त किया जा रहा है। इस जगह पर बाल अकादमी चलाई जाती है, लेकिन पिछले 10 सालों से इमारत की हालत खराब होने के चलते अकादमी यहां से नहीं चलाई जा रही है। इसी के चलते ढाका के के अधिकारी, मोहम्मद मेहेदी जमान ने कहा कि अकादमी की गतिविधियां शुरू करने के लिए इसको ध्वस्त करके कई कमरों वाली एक अर्ध–कंक्रीट इमारत बनाई जाएगी।

पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर तेजी से उभर रहा हृदयप्रदेश

एक बार आओ म्हारे मध्यप्रदेश

पर्यटन

नितिन जैन
(वरिष्ठ पत्रकार)

मध्यप्रदेश, जहां की बात ही कुछ खास है। प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण यह राज्य खनिज, वन्य संपदा और जैव विविधता के साथ सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह प्रदेश पर्यटकों के लिए विशेष कहा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर मध्यप्रदेश की पहचान लगातार मजबूत हो रही है। यहां के प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल सैलानियों को सम्मोहित करने में पूरी तरह सफल हो रहे हैं।देश का सबसे अधिक वन क्षेत्र वाला प्रदेश है मध्यप्रदेश, जहां 10 राष्ट्रीय उद्यान, 25 वन्यजीव अभयारण्य और 9 टाइगर रिजर्व स्थित हैं।

विजनरी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में मध्यप्रदेश निरंतर पर्यटन क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है। प्रदेश सरकार ऐतिहासिक धरोहरों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोने तथा संवारने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। इसका सकारात्मक और आशाजनक परिणाम यह है कि हाल ही में यूनेस्को ने प्रदेश की चार ऐतिहासिक धरोहरों को सीरियल नॉमिनेशन के तहत टेंटेटिव लिस्ट में शामिल किया है। सम्राट अशोक के शिलालेख, चौसठ योगिनी मंदिर, गुप्तकालीन मंदिर और बुंदेला शासकों के महल व किले इन सभी का यूनेस्को की टेंटेटिव लिस्ट में शामिल होना यह सिद्ध करता है कि मध्यप्रदेश अपनी सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक महत्व के कारण देश में विशेष स्थान रखता है। गत वर्ष भी यूनेस्को ने प्रदेश की 6 धरोहरों को टेंटेटिव सूची में शामिल किया थाइनमें ग्वालियर का किला, बुरहानपुर का खूनी भंडारा, चंबल घाटी के शैलचित्र स्थल, भोजपुर का भोजेश्वर महादेव मंदिर, मंडला के रामनगर स्थित गोंड स्मारक और धमनार का ऐतिहासिक समूह शामिल है।मध्यप्रदेश में अब कुल 18 यूनेस्को-घोषित धरोहरें हैं, जिनमें से 3 स्थायी और 15 टेंटेटिव सूची में शामिल हैं। यूनेस्को की स्थायी विश्व धरोहर सूची में खजुराहो के मंदिर समूह, भीमबेटका की गुफाएं और सांची का स्तूप शामिल हैं।

वहीं, टेंटेटिव सूची में मांडू के स्मारक समूह, ओरछा का ऐतिहासिक समूह, नर्मदा घाटी में स्थित भेड़ाघाट-लमेटाघाट, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और चंदेरी जैसे स्थल शामिल हैं। ये उपलब्धियां हमारी धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रमाणित करती हैं। राज्य सरकार धार्मिक पर्यटन को भी सशक्त रूप से बढ़ावा दे रही है। प्रदेश में दो ज्योतिर्लिंग, महाकालेश्वर और ममलेश्वर स्थित हैं। सिंहस्थ से पूर्व ओंकारेश्वर धाम को महाकाल की तरह आलोकित करने के प्रयास सराहनीय हैं।

मोहन सरकार की तत्परता के कारण धार्मिक पर्यटन में सतत प्रगति हो रही है, जिससे देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक आकर्षित हो रहे हैं। अगर ग्रामीण पर्यटन की बात करें तो आज पर्यटक शहरी चकाचौंध से दूर, गांवों की शांति और सरलता की ओर रुख कर रहे हैं। इस संदर्भ में मध्यप्रदेश का ग्रामीण पर्यटन, पर्यटकों की पहली पसंद बनता जा रहा है। राज्य में तेजी से विकसित हो रहे होम-स्टे भारतीय संस्कृति के 'अतिथि देवो भवः' के भाव को साकार कर रहे हैं।₹

ये होम-स्टे ग्रामीण जीवन को नजदीक से देखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं।गांव की गलियों में घूमना, बैलगाड़ी की सवारी, गाय का दूध दुहना, दातुन करना, ये सभी अनुभव पर्यटकों को एक अलग ही आनंद की अनुभूति कराते हैं। नदियों के किनारे ध्यान लगाना, झरनों की कलकल ध्वनि में खो जाना और सुबह मुर्गे की बांग से दिन की शुरुआत, ये सब जीवन को एक नई ताजगी से भर देते हैं। जैविक खेती से उत्पन्न श्रीअन्न और पारंपरिक देशी व्यंजन पर्यटन का स्वाद और बढ़ा देते हैं।ग्राम्य जीवन हमें कर्मठता और संतुलन का संदेश देता है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में 241 होम-स्टे संचालित हो रहे हैं और सरकार 1000 होम-स्टे का लक्ष्य लेकर चल रही है, जो 121 गांवों में स्थापित किए जा रहे हैं। इनका उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन को नई ऊंचाइयां देना है।

एक नजर यहां के पर्यटन क्षेत्र पर...

धार जिले में स्थित प्रेम का प्रतीक मांडू का किला, ग्वालियर का किला, अशोकनगर का चंदेरी, मुरैना का पड़ावली, अनूपपुर जिले का अमरकंटक, रायसेन जिले की भीमबेटका की गुफाएं और सांची के बौद्ध स्तूप, राजधानी भोपाल का केरवा डेम, उमरिया जिले का बांधवगढ़, छतरपुर जिले के खजुराहो के प्रसिद्ध जैन और हिंदू मंदिर समूह, निवाड़ी जिले के ओरछा में स्थित राजाराम का महल, जबलपुर का धुआंधार भेड़ाघाट, उज्जैन में बाबा महाकाल, इंदौर का राजवाड़ा, खण्डवा जिले का ओंकारेश्वर एकात्म धाम, नर्मदापुरम जिले का पचमढ़ी सबसे खास है। मध्यप्रदेश पर्यटकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है। रोमांच, शांति, संस्कृति और इतिहास से भरे इस प्रदेश में हर यात्रा एक नई खोज होती है। अगर आप भी घूमने-फिरने और प्राकृतिक सौंदर्य में खो जाने का मन बना रहे हैं, तो मध्यप्रदेश आपके लिए सबसे खास है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का गौरव है प्रेमचंद का उपन्यास

साहित्य

राम आह्लाद चौधरी

'भारतवर्ष में अभी उपन्यासकारों के जीवन-चरित्र लिखे नहीं गए, इसलिए भारतीय उपन्यास-साहित्य से कोई उदाहरण देना कठिन है। रंगभूमि का बीजांकुर हमें एक अंधे भिखारी से मिला, जो हमारे गाँव में रहता था। एक ज़रा-सा इशारा, एक ज़रा-सा बीज, लेखक के मस्तिष्क में पहुँचकर इतना विशाल वृक्ष बन जाता है कि लोग उस पर आश्चर्य करने लगते हैं।'-प्रेमचंद

प्रेमचंद ने यह बात तब कही थी,जब रंगभूमि का प्रकाशन हो चुका था, इसलिए कि डॉ अमर नाथ झा ने इस उपन्यास को पढ़कर आश्चर्य व्यक्त किया था कि भारत में भी एक ऐसे महान जनकथाकार हैं, जिन्होंने हिंदी में एक ऐसा उपन्यास प्रस्तुत किया है कि हर स्तर पर पश्चिम को हर मामले में चुनौती देता है। सही अर्थों में रंगभूमि उपन्यास भारतीय ज्ञान परंपरा का गौरव है, जो उपन्यास नवउपनिवेशवादी दौर की सच्चाइयों को संबोधित करता है तथा नवउदारवादी आर्थिक विकास की खामियों को उजागर करने में पूरी तरह सक्षम है। इस रंगभूमि उपन्यास के प्रकाशन के सौ साल पूरे हो गए, लेकिन इसकी प्रासंगिकता शाश्वत है, जो जनवादी आंदोलनों का प्रेरणादाई -जीवनदाई खजाना है।भारत की धरती पर जनवादी आंदोलनों ने बार-बार साबित किया है कि प्रेमचंद का उपन्यास रंगभूमि हिंदी साहित्य की धरोहर ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज की नैतिक-सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। एक दृष्टिहीन भिक्षुक, इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र होते हुए भी प्रतीक बन जाता है, जब कोई सवाल करता है कि वह अंधा किसका प्रतीक बनकर रास्ता दिखाता है, तब हमारी जनवादी दुनिया यह उत्तर देती है कि वह हमारी नैतिक शक्ति, आत्मबल, जनसंपृक्ति और सांस्कृतिक जड़ों का प्रकाश स्तंभ है। जब हम रंगभूमि को उसके सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास का मर्म केवल औपनिवेशिक भारत की आलोचना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भविष्य के नवउपनिवेशी और नवउदारवादी भारत की गहरी समीक्षा प्रस्तुत करता है।नवउपनिवेशवाद उस प्रक्रिया को दर्शाता है जिसमें राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद भी किसी देश पर आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से प्रभुत्व बनाए रखा जाता है। भारत ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, परंतु विदेशी पूंजी, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और वैश्विक संस्थानों ने धीरे-धीरे भारतीय नीति, कृषि, शिक्षा और संस्कृति में हस्तक्षेप बढ़ा दिया। इस नवसाम्राज्यवाद का मूल तंत्र 'विकास' के नाम पर संसाधनों पर

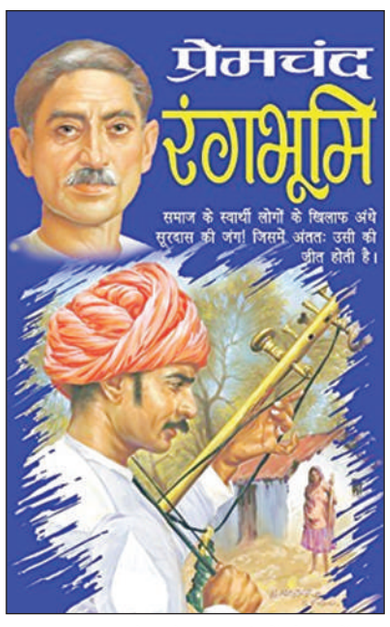

कब्ज़ा जमाना है और मठाधीशों ने मठों पर कब्जा जमाए रखने के लिए नवउदारी का तौर तरीका अपनाया है। इसे ठीक वैसा ही देखा जा सकता है जैसा कि रंगभूमि में सेठ जॉन सेवक के औद्योगिक साम्राज्य के रूप में चित्रित किया गया है तथा आजादी के बाद, खासकर नब्बे के दशक के बाद जिस तरह से सेठ जॉन सेवक के वंशजों के तांडव को देखा

'रंगभूमि' के सौ साल

जा रहा है। सेठ जॉन सेवक एक ईसाई धर्मान्तरित भारतीय हैं, जिनकी पश्चिमी शिक्षा, व्यापारिक दृष्टि और भूमि अधिग्रहण की लोलुपता, नवउपनिवेशवादी सत्ता संरचना की प्रतीक हैं। वे 'कारखाना बनाना' चाहते हैं, पर यह निर्माण स्थानीय ग्रामीणों की आजीविका, संस्कृति और विश्वासों की कीमत पर होता है। यह वही मॉडल है जो आज भारत और विश्व के अनेक हिस्सों में 'मेगा डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स' के नाम पर देखने को मिलता है बाँध, मॉल, फैक्ट्रियाँ, स्मार्ट सिटी जो स्थानीय लोगों को विस्थापित करती हैं। भूमंडलीकरण 1990 के दशक के बाद भारत के लिए आर्थिक सुधारों के साथ एक यथार्थ बन गया। बाज़ार खुला, विदेशी निवेश आया, मगर साथ ही सामाजिक असमानताएँ, सांस्कृतिक विघटन और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण भी बढ़ा। रंगभूमि में सुदर्शन जिस भूमि की रक्षा करता है, वह केवल भूमि नहीं है वह उसकी आस्था, जीवन, स्मृति और पहचान की भूमि है। सेठ जॉन सेवक और उनके समर्थक उसे 'अप्रगतिशील' मानते हैं। आज भूमंडलीकरण भी ऐसे ही सांस्कृतिक संघर्ष को जन्म देता है परंपरा बनाम प्रगति। जो विकास 'भूमि' को नष्ट कर देता है, वह केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक संकट भी उत्पन्न करता हैयही रंगभूमि का केंद्रीय प्रश्न है। सूरदास अंधा है, मगर उसके नैतिक नेत्र सबसे अधिक जाग्रत हैं। वह न हथियार उठाता है, न सत्ता चाहता है, परंतु उसका आत्मबल, सामाजिक प्रतिबद्धता और सार्वजनिक संवाद उसे एक अद्वितीय प्रतिरोधकर्ता बनाते हैं। सूरदास की यह भूमिका आज के नवउपनिवेशी भारत में आदिवासी आंदोलनों, किसान प्रतिरोधों और जनांदोलनों की याद दिलाती है। प्रेमचंद यहाँ भारतीय लोकधर्मी चेतना को आधुनिक नवधार्मिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध खड़ा करते हैं। भूमि के लिए संघर्ष केवल आर्थिक नहीं होता, वह सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक भी होता है। रंगभूमि में सूरदास की भूमि उसका जीवनक्षेत्र है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया भूमि को केवल उत्पादन या निवेश की दृष्टि से देखती हैजिससे विस्थापन, आत्महत्या और पारंपरिक आजीविका का विनाश होता है। राज्य अब 'कल्याणकारी' कम और 'नियामक' अधिक हो गया है। उसकी प्राथमिकता जनकल्याण नहीं, पूंजी निवेश और विदेशी निवेशक बन गई है। यही समस्या रंगभूमि में भी दिखाई देती है। रंगभूमि प्रेमचंद की आर्थिक चेतना का स्पष्ट उदाहरण है। उन्होंने केवल सामाजिक न्याय की बात नहीं की, बल्कि आर्थिक असमानता, भूमि पर कब्ज़ा, पूंजी के वर्चस्व और सत्ता के पक्षपातपूर्ण रवैये की भी गहन आलोचना की। रंगभूमि केवल समाज का चित्रण नहीं करता, वह उसकी दिशा भी तय करता है। इस उपन्यास में यह बताया गया है कि जब भूमि पर पूंजी का आधिपत्य हो जाता है और सत्ता उसका सहयोगी बन जाता है, तो समाज का विनाश निश्चित है। अंततः रंगभूमि हमें यह सिखाता है कि आर्थिक विकास केवल आंकड़ों से नहीं, बल्कि लोगों की ज़मीन, सम्मान और अस्मिता की रक्षा से तय होता है। भूमि, पूंजी और सत्ता के इस संघर्ष में मानवता का पक्ष लेना ही साहित्य का और समाज का सबसे बड़ा फौरी कर्तव्य है। आखिर प्रेमचंद ने इस कर्तव्य का पालन क्यों किया, इसका उत्तर उन्होंने ''माधुरी'' में 23 अक्टूबर, 1922 को प्रकाशित अपने आलेख में प्रस्तुत किया -''आज भी कितने व्यक्ति ऐसे मिलते हैं जिन्हें उपन्यासों से चिढ़ है। उन्होंने व्रत कर लिया है कि उपन्यास कदापि न पढ़ेंगे। कारण यही है कि हिंदी के वर्तमान उपन्यासों ने उन्हें निराश किया है। नए उपन्यास-लेखकों का कर्तव्य है कि वे उपन्यास-साहित्य के मुख को उज्ज्वल करें, इस बदनामी के दाग़ को मिटा दें।''

अजब-गजब

दुनिया की सबसे बूढ़ी हथिनी का निधन

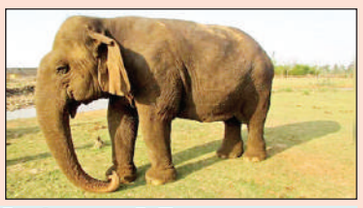

यह दुनियां की सबसे बूढ़ी हथिनी 'वत्सला' है जिसका बीते 8 जुलाई को 109 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वत्सला का निधन पन्ना टाइगर रिजर्व में हुआ था यह हाथी 1917 के आसपास पैदा हुआ था। वत्सला धरती पर अब तक ज्ञात 100 साल से अधिक जीने वाला एकमात्र हाथी है।

चावल के पौधों की सुरक्षा का अनोखा तरीका

धान के खेत मे बत्तखों को कीड़े मकोड़े खाने के लिए छोड़ा जाता है। यह चावल के पौधों की सुरक्षा का एक प्राकृतिक तरीका होता है। वे अपने मल में नाइट्रोजन युक्त उर्वरक भी छोड़ती हैं जो फसलों के लिए लाभदायक होता है।

सबसे ऊंचा ग्लेशियर झरना

यह दुनिया का सबसे ऊंचा ग्लेशियर झरना है, जो कि अंटार्कटिका में स्थित है।

मां जैसी कोई नहीं

मां जैसा कोई नहीं होता फ़िर चाहें वो जानवर ही क्यों न हो। सभी को अपनी संतान की चिंता होती है।

बिना गुठली के आम

चीन में फलों की खेती प्रचूर मात्रा में होती है। चीन में ऐसे भी आम उगाए जाते हैं जिनमें गुठलिया ही नहीं होती हैं।

शरीर के लिए घातक भी हो सकती है हवा

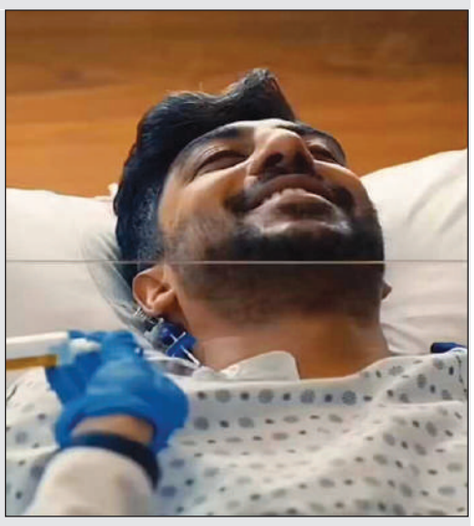

एयर एम्बोलिज्म एक गंभीर मेडिकल इमरजेंसी है जिसमें हवा का एक बुलबुला नसों के जरिए शरीर के रक्त संचार में प्रवेश कर जाता है। जब किसी मरीज को सेंट्रल लाइन (जैसे सबक्लेवियन या इंटरनल जुगुलर वेन) के जरिए दवा या फ्लूइड दिया जा रहा होता है, उस समय अगर लाइन में थोड़ी सी भी हवा रह जाती है जैसे कि कैप खुला रह जाए, ठीक से फ्लशिंग न की जाए, ड्रेसिंग या सिरिंज बदलते समय सावधानी न बरती जाए, तो वही हवा रक्त संचार में चली जाती है और अचानक मौत का कारण भी बन सकती है। शरीर में हवा कहां जाकर नुकसान पहुंचाती है? हृदय में, हवा दाएं आलिंद या दाएं वेंट्रिकल में जाकर रक्त का प्रवाह रोक सकती है जिससे कार्डियक अरेस्ट (हृद्याघात) हो सकता है।यदि रोगी को जन्मजात हृदय दोष, जैसे कि पीएफओ (पेटेंट फोरामेन ओवेल) है तो हवा नस को बायपास करके सीधे मस्तिष्क तक पहंच सकती है जिससे स्ट्रोक हो सकता है। हवा कितनी घातक है? यदि नस में केवल 0.5 से 1 मिली/किलोग्राम हवा प्रवेश करती है, तो यह व्यक्ति की जान लेने के लिए पर्याप्त है। उदाहरण के लिए, 60 किग्रा के व्यक्ति के लिए 30-60 मिली हवा घातक हो सकती है।

दिखने में खूबसूरत लेकिन डरावना 'इगुआज़ू फॉल्स'

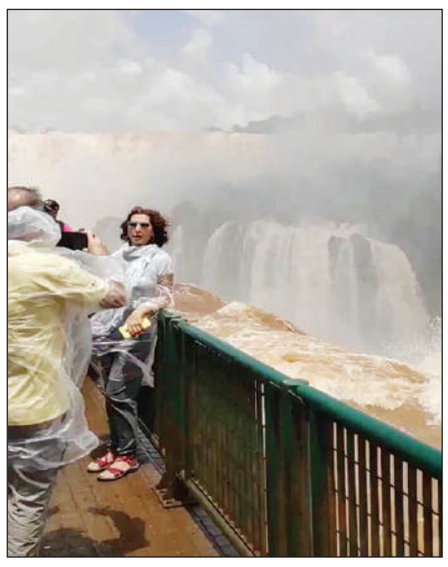

इगुआज़ू फॉल्स, जिसे इगुआसु फॉल्स भी कहा जाता है, अर्जेंटीना और ब्राजील की सीमा पर स्थित एक विशाल जलप्रपात प्रणाली है। यह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली जलप्रपातों में से एक है, जो इगुआज़ू नदी पर स्थित है। यह देखने में खूबसूरत के साथ-साथ बहुत डरावना भी लगता है।

यह दुनिया की सबसे बड़ी जलप्रपात प्रणाली है, जो 275 अलग-अलग झरनों से बनी है और लगभग 3 किलोमीटर तक फैली एक घोड़े की नाल के आकार की वक्र रेखा है। भारी बारिश में यह ऊफान पर होता है।

गुलाब के फूल से लिपटा खूबसूरत सांप

गुलाब के फूल से लिपटा यह खूबसूरत सांप पिट वाइपर (ट्राइमेरेसुरस इंसुलारिस) है, जो इंडोनेशिया के छोटे सुंडा द्वीपों पर पाया जाता है। बड़ी बात यह कि इसकी नीली किस्म दुर्लभ है और केवल कोमोडो द्वीप जैसे स्थानों में ही पाया जाता है। दूर-दूर से इसे देखने लोग यहां आते हैं।

बर्फ के बीच सरपट दौड़ती ट्रेन

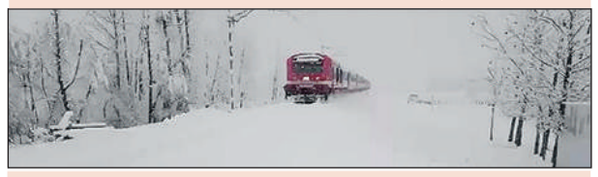

देखने में ये आपको स्विट्जरलैंड लग सकता है। लेकिन ये हमारा प्यारा कश्मीर है जहां बर्फ में ट्रेन सरपट दौड़ रही है। यूरोप के देशों में आपने चारों तरफ फैली बर्फ के बीच चलती ट्रेनों की फोटो-वीडियोज जरूर देखी होंगी। कई सारे भारतीय बर्फबारी का मजा लेने स्विट्जरलैंड जैसे देशों में जाते हैं। लेकिन यह नजारा तो आप भारत में भी देख सकते हैं।

लाखों की भीड़ खींचने वाला समुद्र तट

लाखों की भीड़ खींचने वाला समुद्र तटचीन के शेन्ज़ेन के डेमिशा समुद्र तट पर, विशेष रूप से सप्ताहांत और सार्वजनिक छुट्टियों के दौरान भारी सैलानी आते हैं। यह समुद्र तट इतना लोकप्रिय है कि 2015 में, एक दिन में 130,000 से अधिक लोगों ने भीड़ लगा दी थी।

ईमान, इस्लाम और इंतकाम के त्रिकोण में उलझा मुस्लिम वोट बैंक

संजय सक्सेना
(वरिष्ठ पत्रकार)

बिहार की राजनीति में मुस्लिम वोट बैंक हमेशा से एक निर्णायक शक्ति रहा है, लेकिन 2025 के विधानसभा चुनाव में यह वोट बैंक पहली बार तीन गहरे और परस्पर विरोधी विमर्शों के बीच फंसा हुआ है-ईमान, इस्लाम, और इंतकाम। यह न सिर्फ चुनावी रणनीतियों को जटिल बना रहा है, बल्कि मुस्लिम मतदाताओं को भी गहरे अंतर्द्वंद्व में डाल रहा है। राज्य में लगभग 1.8 करोड़ मुस्लिम मतदाता हैं, जो कुल मतदाताओं का करीब 17.8 फीसद हिस्सा हैं। सीमांचल, मिथिलांचल, कोसी, सारण और पटना जिलों की करीब 47 विधानसभा सीटों पर ये वोट निर्णायक हैं। ऐसे में हर दल इस वर्ग को अपने पाले में लाने की होड़ में है लेकिन इस बार वह होड़ विचारधारात्मक स्तर तक जा पहुंची है।राजद नेता तेजस्वी यादव मुस्लिम मतदाताओं को साधने के लिए दो प्रमुख आयामों पर काम कर रहे हैं। पहला, धार्मिक पहचान की रक्षा और दूसरा, केंद्र सरकार की नीतियों के खिलाफ आक्रोश को संगठित करना। वक्फ अधिनियम में बदलाव, एनआरसी, एनपीआर और वोटर लिस्ट से मुस्लिम नामों को हटाने जैसे मुद्दों को उन्होंने चुनावी मंचों पर बार-बार उठाया है। इससे वे मुस्लिम मतदाताओं को यह संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं कि महागठबंधन ही उनकी धार्मिक और सामाजिक सुरक्षा की गारंटी है।हालांकि, 2020 के विधानसभा चुनाव में एआईएमआईएम के जीते पांच में से चार विधायकों को तोड़कर राजद में शामिल कर लेना तेजस्वी के 'मुस्लिम हितैषी' दावे को कमजोर भी करता है। असदुद्दीन ओवैसी इसे 'सियासी धोखा' बताते हैं। तेजस्वी यादव के लिए सीमांचल की सीटें अभी भी एक परीक्षा की घड़ी हैं, जहां मुस्लिम मतदाता न केवल पहचान के आधार पर, बल्कि अब प्रतिनिधित्व और आत्मसम्मान के आधार पर भी सोचने लगे हैं। एआईएमआईएम प्रमुख

असदुद्दीन ओवैसी इस बार राजद से दूरी बनाते हुए बिहार में एक तीसरे मोर्चे की भूमिका में आना चाहते हैं। उनका तर्क है कि जब 2020 में सीमांचल की जनता ने उन्हें चुना, तब महागठबंधन ने उनके विधायकों को तोड़कर राजनीतिक विश्वासघात किया। इसी 'इंतकाम' की भावना को वे इस बार चुनावी मुद्दा बना रहे हैं। ओवैसी ने महागठबंधन में शामिल होने का प्रस्ताव भी रखा था, लेकिन जब कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला तो उन्होंने 50 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी शुरू कर दी। एआईएमआईएम अब सीमांचल से बाहर दरभंगा, पटना, भागलपुर और किशनगंज जैसे इलाकों में भी अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रही है। इससे महागठबंधन को नुकसान तय है, क्योंकि मुस्लिम वोटों में बिखराव होगा, जो अंततः बीजेपी-एनडीए के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर इस चुनाव में एक अलग तरह का नैरेटिव लेकर आए हैं। वे मुस्लिम समुदाय की गरीबी और पिछड़ेपन को उसकी 'राजनीतिक चूक' का नतीजा बताते हैं। उनका साफ कहना है कि ''मुसलमानों ने दशकों तक सिर्फ डर के आधार पर वोट डाले हैं, खासकर राजद को, लेकिन बदले में उन्हें सिर्फ प्रतिनिधित्व की बजाय प्रतीकात्मकता मिली है। प्रशांत किशोर का आह्वान है कि मुस्लिम मतदाता अब 'ईमान' यानी नैतिक दृष्टिकोण से वोट करें और ऐसे प्रतिनिधि चुनें जो सिर्फ धार्मिक भावनाओं की राजनीति न करें बल्कि समाज के आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान की बात करें। उनकी योजना है कि वे 75 सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार उतारें और इन्हें नए नेतृत्व के रूप में पेश करें। हालांकि, उनकी पार्टी की संगठनात्मक उपस्थिति अभी कमजोर है और उन्हें जमीन पर पकड़ बनाने के लिए अधिक मेहनत करनी होगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और जेडीयू इस बार एनडीए के भीतर एक सॉफ्ट सेकुलर छवि पेश करने की कोशिश में लगे हैं। वे मुस्लिम मतदाताओं को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि जेडीयू ने पिछले दो दशकों में अल्पसंख्यकों के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं जैसे छात्रवृत्ति, मदरसा आधुनिकीकरण, अल्पसंख्यक आवास योजना आदि। इसके अलावा, बीजेपी और जेडीयू की रणनीति पसमांदा मुसलमानों यानी अजलाफ और अरजाल वर्गों को साधने की है। बीजेपी ने 'पसमांदा मुस्लिम सम्मेलन' कर संकेत दिया है कि वह अब अल्पसंख्यक समाज के उस वर्ग को साथ जोड़ना चाहती है, जो अभी तक मुख्यधारा से बाहर रहा है। लेकिन वक्फ अधिनियम में बदलाव और एनआरसी पर नीतीश कुमार की चुप्पी मुस्लिम समाज के एक बड़े वर्ग को असहज कर रही है। खासकर वह तबका जो खुद को सामाजिक न्याय के दायरे में देखता है, वह इस चुप्पी को राजनीतिक सहमति मानता है।इस बार सबसे बड़ा सवाल यही है कि मुस्लिम वोट बैंक बिखरेगा या किसी एक राजनीतिक ध्रुव के इर्द-गिर्द संगठित हो जाएगा? 2020 में महागठबंधन को 76 फीसद मुस्लिम वोट मिले थे, एआईएमआईएम को 11 फीसद और एनडीए को 10 फीसद से भी कम। लेकिन 2025 में एआईएमआईएम के विस्तार, पीके के हस्तक्षेप और एनडीए की रणनीति के चलते यह समीकरण पूरी तरह से बदल सकता है।

यदि तेजस्वी, ओवैसी और प्रशांत किशोर आपस में कोई सामंजस्य नहीं बनाते, तो मुस्लिम वोट कम से कम तीन हिस्सों में बंट सकता है। इसका सीधा फायदा बीजेपी और जेडीयू को मिल सकता है, खासकर उन सीटों पर जहां बहुमत थोड़ा-बहुत फर्क कर सकता है। दूसरी ओर, यदि एआईएमआईएम सीमांचल में अपनी सीटें बरकरार रखती है, पीके पसमांदा मुस्लिमों को कुछ हद तक प्रभावित करते हैं और राजद पारंपरिक एमवाई समीकरण को बचा पाती है, तो मुस्लिम वोटरों की भूमिका सत्ता के संतुलन को पूरी तरह से बदल सकती है।

बिहार में मुस्लिम वोट बैंक अब केवल धार्मिक पहचान का मामला नहीं रहा। यह अब प्रतिनिधित्व, आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और राजनीतिक आत्मसम्मान का मुद्दा बन चुका है। ईमान (सही प्रतिनिधित्व), इस्लाम (धार्मिक सुरक्षा) और इंतकाम (सियासी बदला) इन तीनों आयामों के बीच मुस्लिम मतदाता अब विचार कर रहा है। अगले कुछ महीनों में यह तय होगा कि मुस्लिम वोटर पारंपरिक ध्रुवीकरण से ऊपर उठकर नए विकल्पों की ओर जाते हैं या फिर एक बार फिर पुराने समीकरणों को ही दोहराते हैं। लेकिन इतना तय है कि इस बार उनका वोट सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि सत्ता का संतुलन भी तय करेगा।

ओबीसी को टिकट दे सामाजिक समीकरण...

पेज 5 का बाकी

कि उनकी पार्टी उनके हितों की रक्षा कर सकती है।अखिलेश की रणनीति का एक और आयाम गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों और अन्य सामाजिक समूहों को जोड़ना है। उन्होंने ब्राह्मण और क्षत्रिय समुदायों को साधने की कोशिश की है। 2025 में महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर अखिलेश ने क्षत्रिय नेताओं के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की और उनके बलिदान को याद किया। इसी तरह, ब्राह्मण नेताओं के साथ बैठक कर उन्होंने संदेश दिया कि उनकी पार्टी केवल एक विशेष समुदाय तक सीमित नहीं है। 2024 के लोकसभा चुनावों में सपा ने चार ब्राह्मण और एक भूमिहार प्रत्याशी को टिकट दिया, जिनमें से कुछ ने जीत हासिल की। यह दर्शाता है कि अखिलेश सॉफ्ट हिंदुत्व और सामाजिक समावेश की रणनीति को अपनाकर अपने वोट बैंक का विस्तार कर रहे हैं।महिलाओं और युवाओं को आकर्षित करना भी अखिलेश की रणनीति का हिस्सा रहा है। उनके शासनकाल में शुरू की गई 1090 महिलाओं की हेल्पलाइन और कामधेनु योजना जैसी पहले महिलाओं और ग्रामीण मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए थीं। इसके अलावा, अखिलेश ने डिजिटल और सोशल मीडिया का उपयोग कर युवा मतदाताओं को जोड़ने की कोशिश की है। उनकी सक्रिय ऑनलाइन उपस्थिति और सोशल मीडिया पर त्वरित प्रतिक्रियाएं युवाओं में उनकी छवि को मजबूत करती हैं। वे सामाजिक मुद्दों, जैसे बुलडोजर कार्रवाई के खिलाफ अनन्या यादव जैसे मामलों में समर्थन देकर, सामाजिक न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।कांग्रेस और अन्य दलों के साथ गठबंधन की रणनीति भी अखिलेश के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि, 2024 के उपचुनावों में उन्होंने कांग्रेस को सीटें देने में सावधानी बरती, ताकि उनकी पार्टी का सेक्युलर आधार कमजोर न हो। यह दर्शाता है कि अखिलेश अपनी पार्टी को उत्तर प्रदेश में सेक्युलर राजनीति का प्रमुख चेहरा बनाए रखना चाहते हैं। इसके साथ ही, वे छोटे दलों और नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल कर रहे हैं, ताकि स्थानीय स्तर पर प्रभाव बढ़ाया जा सके।हालांकि, अखिलेश के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। कुछ मुस्लिम नेताओं, जैसे मौलाना शहाबुद्दीन, ने उन पर मुस्लिम समस्याओं को नजरअंदाज करने का आरोप लगाया है। इसके अलावा, बसपा और अन्य दल उनके वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश कर रहे हैं। फिर भी, अखिलेश की रणनीति का केंद्र पीडीए फॉर्मूला है, जिसे वे और मजबूत करने में जुटे हैं। गैर-यादव ओबीसी, दलित, ब्राह्मण, क्षत्रिय, और युवा-महिला मतदाताओं को जोड़कर वे एक व्यापक सामाजिक गठबंधन बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। अखिलेश की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे इन विभिन्न समुदायों के बीच संतुलन कैसे बनाते हैं। उनकी रणनीति में सामाजिक समावेश, क्षेत्रीय विकास, और डिजिटल उपस्थिति का मिश्रण है, जो उन्हें 2027 के चुनावों में एक मजबूत दावेदार बना सकता है।

कलकत्ता मैथमेटिकल सोसाइटी कार्यालय में पुस्तक ग्रहण समारोह

निज संवाददाता : पूर्व आईएएस कांता प्रसाद सिंह ने कलकत्ता मैथमेटिकल सोसाइटी के कार्यालय में संस्था के संपादक को अपनी दो पुस्तकें 'लीलावती' और 'भास्कराचार्य का बीजगणित' सौंपीं। मैथेमेटिशियन नारायण चंद्र घोष ने कांता प्रसाद सिंह से अनुरोध किया था कि वे दोनों पुस्तकें लिखकर सोसाइटी को दें। इस दिन के पुस्तक ग्रहण समारोह के मौके पर सोसाइटी के संपादक और सह-संपादक उपस्थित थे और उन्होंने कांता प्रसाद सिंह से दोनों पुस्तकें प्राप्त कीं।

केशव मौर्य के सहारे भाजपा का ओबीसी दांव

- संगठन और सत्ता के संतुलन से 2027 की तैयारी

अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

भारतीय जनता पार्टी में उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर पिछले कई महीनों से चल रहा मंथन अब निर्णायक मोड़ पर पहुंचता नजर आ रहा है। लोकसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश में पार्टी को मिले अपेक्षाकृत कमजोर जनादेश के बाद संगठन के पुनर्गठन की जरूरत महसूस की जा रही है। राज्य में अब तक भूपेंद्र चौधरी के बाद किसी नए प्रदेश अध्यक्ष की घोषणा नहीं हो सकी है और इस विलंब को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं में सवाल भी उठने लगे हैं। इस बीच उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की बढ़ती सक्रियता, दिल्ली में लगातार शीर्ष नेताओं से मुलाकातें और ओबीसी समीकरण को लेकर उनका नाम चर्चा के केंद्र में आ गया है। उत्तर प्रदेश में भाजपा का प्रदर्शन लोकसभा चुनाव में चिंताजनक रहा। जहां 2019 में भाजपा ने सहयोगियों सहित 64 सीटें जीती थीं, वहीं 2024 में यह संख्या घटकर 36 रह गई। इसमें भी भाजपा अकेले 33 सीटें जीत पाई, जबकि सपा-कांग्रेस गठबंधन ने 43 सीटों पर कब्जा जमाकर स्पष्ट संकेत दे दिया कि विपक्ष की सामाजिक रणनीति ने भाजपा के परंपरागत वोट बैंक में सेंध लगाई है। खासतौर पर ओबीसी और दलित समुदाय के मतदाताओं का झुकाव सपा के पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फार्मूले की ओर गया।ऐसे में भाजपा के रणनीतिकारों को यह समझ में आ गया है कि यदि 2027 के विधानसभा चुनाव में पार्टी को जीत की हैट्रिक बनानी है, तो संगठन को फिर से सशक्त करना होगा। यही वजह है कि पार्टी अब ऐसा चेहरा तलाश रही है, जो न सिर्फ संगठनात्मक अनुभव रखता हो, बल्कि सामाजिक समीकरणों को साधने में भी सक्षम हो। इस समीकरण में सबसे उपयुक्त नाम एक बार फिर उभर कर आया है केशव प्रसाद मौर्य का। 8 जुलाई को केशव प्रसाद मौर्य की दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकातों ने चर्चाओं को हवा दी। यह मुलाकातें केवल शिष्टाचार नहीं मानी जा रही हैं, बल्कि इन्हें संगठन के पुनर्गठन और आगामी चुनावी रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है। खुद केशव मौर्य ने इस बात की पुष्टि की है कि इन बैठकों में 2027 की जीत की रणनीति पर चर्चा हुई। यह वही केशव मौर्य हैं, जिनके नेतृत्व में 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 403 में से 312 सीटें जीतकर इतिहास रचा था। उस समय वे प्रदेश अध्यक्ष थे और उन्होंने पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत करने का काम किया था।मौर्य की सबसे बड़ी ताकत यह है कि वे भाजपा के मूल कार्यकर्ता रहे हैं, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद से होते हुए पार्टी की मुख्यधारा में आए। उनका व्यक्तित्व एक साधारण कार्यकर्ता से लेकर उपमुख्यमंत्री तक का सफर तय करने वाले नेता का है, जो पार्टी के जमीनी कार्यकर्ताओं के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। यही वजह है कि संगठन को फिर से सक्रिय और ऊर्जावान बनाने के लिए उनके नाम पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

केशव मौर्य का नाम भाजपा के लिए इस समय और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि पार्टी को एक बार फिर ओबीसी समुदाय को अपने साथ मजबूती से जोड़ना है। भाजपा को अच्छी तरह से यह एहसास हो चुका है कि विपक्ष, खासकर सपा, ओबीसी वोट बैंक को खींचने की पूरी कोशिश में है। अखिलेश यादव ने पीडीए फार्मूले को जिस तरीके से पेश किया है, उसमें ओबीसी और दलित वर्ग को प्रमुखता दी गई है। ऐसे में भाजपा को जवाब उसी अंदाज में देना होगा। और यह काम केशव मौर्य जैसे कद्दावर ओबीसी नेता ही कर सकते हैं, जिनकी सामाजिक स्वीकार्यता व्यापक है।हालांकि, प्रदेश अध्यक्ष पद पर फैसला केवल सामाजिक समीकरणों के आधार पर नहीं लिया जाएगा। इसके पीछे संगठन और सत्ता के बीच संतुलन की भी बड़ी भूमिका है।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि योगी आदित्यनाथ को 2027 में मुख्यमंत्री चेहरे के रूप में दोबारा प्रोजेक्ट किया जाना तय है। लेकिन समय-समय पर पार्टी के अंदर से ऐसी आवाजें उठती रही हैं कि केशव मौर्य को भी सीएम पद का दावेदार घोषित किया जाना चाहिए। ऐसे में पार्टी के लिए यह जरूरी हो जाता है कि मौर्य को संगठन में लाकर उन्हें सत्ता की दौड़ से बाहर रखा जाए, ताकि योगी आदित्यनाथ का रास्ता साफ रहे। इस पूरी रणनीति के पीछे केंद्रीय नेतृत्व की सोच यह है कि पार्टी को एक ऐसा चेहरा चाहिए, जो न सिर्फ सामाजिक समीकरणों को साधे बल्कि संगठन को भी धार दे। और इस पैमाने पर केशव मौर्य खरे उतरते हैं। यही कारण है कि अमित शाह ने हाल ही में एक कार्यक्रम में मौर्य को 'प्रिय मित्र' कहकर संबोधित किया, जबकि योगी आदित्यनाथ को 'लोकप्रिय मुख्यमंत्री' बताया। यह संकेत है कि पार्टी नेतृत्व दोनों नेताओं को संतुलित रूप से आगे बढ़ाना चाहता है।इस बीच, भाजपा के भीतर और भी कई नामों पर विचार किया जा रहा है। ओबीसी वर्ग से स्वतंत्रदेव सिंह, अमर पाल मौर्य, धर्मपाल सिंह लोधी, बीएल मौर्य और बाबूराम निषाद के नाम चर्चा में हैं। वहीं दलित समुदाय से बेबी रानी मौर्य का नाम भी सामने आया है। ब्राह्मण चेहरे के तौर पर पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा, लक्ष्मीकांत वाजपेयी और केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद के नामों पर विचार हो रहा है। यदि पार्टी पश्चिमी उत्तर प्रदेश को साधना चाहती है, तो जितिन प्रसाद और महेश शर्मा जैसे नेता विकल्प हो सकते हैं।हालांकि भाजपा की रणनीति यह भी रही है कि पार्टी आमतौर पर उन नेताओं को अहम पद देती है, जिनका नाम सार्वजनिक रूप से ज्यादा चर्चा में नहीं होता। हाल ही में राजस्थान, मध्य प्रदेश और दिल्ली में मुख्यमंत्री पद की नियुक्तियों ने यही साबित किया है। ऐसे में यह कहना जल्दबाजी होगी कि मौर्य का नाम ही फाइनल है, लेकिन यह जरूर है कि वे इस रेस में सबसे आगे हैं। प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति को लेकर भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. दिनेश शर्मा ने स्पष्ट किया है कि पार्टी की एक तय प्रक्रिया होती है। पहले सभी प्रदेश इकाइयों के चुनाव कराए जाते हैं, फिर राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होता है और उसके बाद प्रदेश अध्यक्षों की नियुक्ति होती है। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि अब प्रदेशों में लगभग चुनाव हो चुके हैं, इसलिए राष्ट्रीय अध्यक्ष और प्रदेश अध्यक्षों की नियुक्ति किसी भी समय हो सकती है।उत्तर प्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर देरी के पीछे चार प्रमुख कारण माने जा रहे हैं पहला, नया अध्यक्ष किस जाति या वर्ग से होगा; दूसरा, क्या वह पूर्वांचल से होगा या पश्चिम यूपी से; तीसरा, क्या वह विपक्ष के पीडीए समीकरण को तोड़ पाएगा; और चौथा, क्या मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उस नाम से सहज होंगे। सूत्रों की मानें तो पार्टी इन चारों सवालों पर गहन मंथन कर रही है और जल्द ही निर्णय लिया जाएगा। अभी तक पार्टी की रणनीति यही रही है कि 2026 के पंचायत चुनाव और 2027 के विधानसभा चुनावों के लिए संगठन को पहले से तैयार किया जाए। अगर केशव मौर्य को दोबारा प्रदेश अध्यक्ष बनाया जाता है, तो भाजपा एक साथ कई निशाने साध सकेगी। एक, संगठन को अनुभव और जनाधार से लैस नेतृत्व मिलेगा; दो, ओबीसी समाज को संदेश जाएगा कि पार्टी उनके भरोसे पर कायम है; और तीन, सत्ता और संगठन के बीच संतुलन बना रहेगा, जिससे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व को चुनौती नहीं मिलेगी। अब सबकी निगाहें दिल्ली पर हैं, जहां से भाजपा के बड़े फैसले होते हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या भाजपा एक बार फिर केशव मौर्य पर भरोसा जताएगी या किसी नए चेहरे को सामने लाकर चौंकाएगी। लेकिन इतना तय है कि प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति भाजपा की 2027 की रणनीति का पहला बड़ा संकेत होगी। और संभव है कि यह संकेत संगठन में नई ऊर्जा और विपक्ष को सीधी चुनौती देने की दिशा में पहला कदम हो।

कुलधरा. राजस्थान के इस शापित गांव के किस्से सुनकर खौफ से भर जाता है दिल

प्रकाश पांडेय (वरिष्ठ पत्रकार)

राजस्थान की सुनहरी रेतों के बीच जैसलमेर की मरुभूमि में एक ऐसा गांव बसा है, जो अब केवल खंडहरों की शक्ल में सांस लेता है। दीवारें खामोश हैं, चूल्हे बुझ चुके हैं और गलियां वीरान हैं, लेकिन हर कोना, हर पत्थर एक दहला देने वाली कहानी कहता है। यह गांव है कुलधरा, जिसे लोग शापित गांव के नाम से जानते हैं।

कहां है कुलधरा...

राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित कुलधरा गांव रेगिस्तान के बीचोबीच फैला हुआ है। कभी यह एक समृद्ध और खुशहाल बस्ती थी, लेकिन आज यहां इंसानों की जगह सिर्फ रेत के टीले, वीरान गलियां और सुनसान घर दिखाई देते हैं। दो सौ साल से यह गांव वीरान पड़ा है और इसके पीछे की कहानी जितनी रहस्यमयी है, उतनी ही दर्दनाक और डरावनी भी।

कभी आबाद था शापित कुलधरा

स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार कुलधरा कभी एक आबाद और समृद्ध गांव था। यहां पालीवाल ब्राह्मण निवास करते थे, जो अपनी

बुद्धिमत्ता, जल प्रबंधन, व्यापारिक समझ और सामाजिक मर्यादाओं के लिए प्रसिद्ध थे। गांव में उत्सव, पूजा और सांस्कृतिक गतिविधियों की भरमार थी। यह गांव जैसलमेर रियासत का हिस्सा था और वहां के लोग खुशहाल जीवन व्यतीत करते थे, लेकिन एक दिन एक ऐसी घटना घटी जिसने गांव की किस्मत ही बदल दी।

खूबसूरत कन्या पर दीवान की बुरी नजर

कहते हैं, कुलधरा में एक दिन एक सुंदर कन्या का विवाह तय हुआ था। दुर्भाग्यवश, उस लड़की की सुंदरता पर जैसलमेर के अत्याचारी दीवान सालिम सिंह की बुरी नजर पड़ गई। सालिम सिंह उस कन्या से विवाह करना चाहता था। उसने जबरदस्ती करने की कोशिश की और गांव वालों को धमकी दी कि अगर उन्होंने उसका प्रस्ताव नहीं स्वीकारा, तो वह गांव पर कहर बरपा देगा।

कुलधरा को दिया गया श्राप

कहा जाता है कि गांव छोड़ते समय पालीवाल ब्राह्मणों ने कुलधरा को श्राप दिया कि अब यहां कोई कभी बस नहीं पाएगा। इतिहास गवाह है, कुलधरा आज तक नहीं बस पाया। जो भी वहां बसने की कोशिश करता है, अजीब घटनाओं का शिकार होता है। कुछ रात में कदमों की आहट, तो कोई साये देखने की बात करता है।

आज भी खड़े हैं खंडहर

आज भी कुलधरा में आप जाकर देख सकते हैं, टूटी हुई हवेलियां, चूल्हे, मटके और दीवारें जो उस समृद्धि की कहानी कहती हैं, जो कभी यहां थी। कुछ घरों को राज्य सरकार ने पर्यटकों के लिए सजाकर रखा है, लेकिन सच्चाई यह है कि रात को कोई वहां ठहरने की हिम्मत नहीं करता। मंदिर अब भी उसी जगह पर है, मानो हर बीते पल का साक्षी हो।

सम्मान के लिए ठुकराया प्रस्ताव

पालीवाल ब्राह्मणों के लिए यह प्रस्ताव सिर झुकाने जैसा था, जिसे उन्होंने सिरे से नकार दिया। उनका मानना था कि सम्मान की कीमत जान से कहीं ज्यादा होती है, लेकिन दीवान ने दोबारा सोचने के लिए कुछ दिन का वक्त दिया, साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से यह संकेत भी दे दिया कि अगर बात नहीं मानी गई, तो अंजाम खौफनाक होगा।जैसे ही पंचायत बैठी, पूरे गांव ने एक असाधारण निर्णय लिया। अपनी अस्मिता, संस्कृति और बेटी की लाज की रक्षा के लिए कुलधरा के सभी लोगों ने गांव छोड़ने का निर्णय लिया।रात के अंधकार में, बिना किसी को भनक लगे, 83 गांवों के लोग अपने घर, खेत, मंदिर सब कुछ छोड़कर चले गए। उन्होंने एक ऐसा त्याग किया, जिसकी मिसाल इतिहास में शायद ही मिलती हो।

सालिम सिंह की निष्ठुरता

अब सवाल उठता है, आखिर सालिम सिंह इतना जालिम क्यों था? असल में उसका बचपन ही बदले की भावना से भरा हुआ था। उसके पिता, स्वरूप सिंह, जैसलमेर के दीवान थे, लेकिन जब उन्होंने राजदरबार के खिलाफ साजिश रची, तो राजकुमार राय सिंह ने दरबार में ही उनकी गर्दन कलम कर दी।उस वक्त सालिम महज 11 साल का था और उसने अपनी आंखों के सामने पिता की हत्या होते देखी। तभी से उसने कसम खाई कि एक दिन वो जैसलमेर पर राज करेगा और यही जिद उसे अत्याचारी सालिम सिंह बना गई।आज जब हम कुलधरा की टूटी गलियों में चलते हैं, तो सिर्फ इतिहास नहीं, सम्मान की सिसकती लेकिन सशक्त आवाज सुनाई देती है।

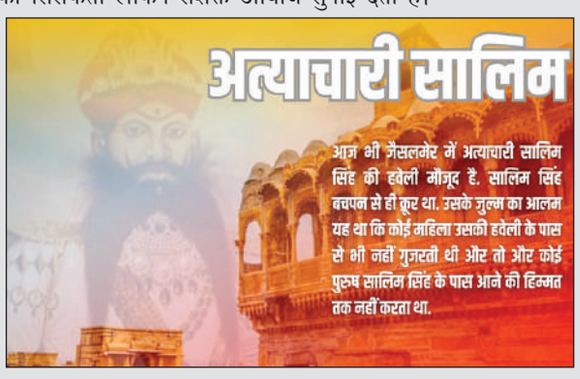

दिव्या देशमुख बनीं भारत की पहली महिला विश्व कप चैंपियन

टाईब्रेकर में हम्पी को हराकर जीता विश्व खिताब

शतरंज में ऐतिहासिक जीत

निज संवाददाता : महिला शतरंज विश्व कप के फाइनल मुकाबले में दिव्या देशमुख ने ग्रैंडमास्टर और हमवतन कोनेरू हम्पी को हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। वह फिडे महिला शतरंज विश्व कप जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गईं। कोनेरू हम्पी के पास वापसी का एक छोटा सा मौका था, लेकिन वह इसका फायदा नहीं उठा सकीं। दिव्या ने काले मोहरों पर एक शानदार जीत दर्ज की। अंतरराष्ट्रीय मास्टर दिव्या देशमुख ने अपने से ऊंची रैंकिंग वाली ग्रैंडमास्टर और हमवतन कोनेरू हम्पी को फिडे महिला विश्व कप फाइनल के पहले और दूसरे गेम में कोई मौका दिए बिना ड्रॉ खेलने पर मजबूर किया था। इससे मैच टाईब्रेकर में पहुंचा था। बीते सोमवार को हुए फिडे महिला विश्व कप के फाइनल में दिव्या ने अपने भारतीय साथी कोनेरू हंपी को टाईब्रेकर में 2.51.5 के स्कोर से हराया। इससे पहले दोनों क्लासिकल गेम ड्रॉ हो गए थे, जिससे मुकाबला टाईब्रेकर तक पहुंचा।पहली रैपिड गेम में दिव्या ने सफेद मोहरों से खेला। दिव्या और हंपी दोनों ने आक्रामक रुख अपनाया, लेकिन किसी को जीत का स्पष्ट मौका नहीं मिला और दोनों की सहमति से मैच ड्रॉ हो गया। दूसरी रैपिड गेम में दिव्या ने काले मोहरों से खेला। जीत के लिए दृढ़ संकल्पित दिव्या ने तेजी से चालें चलीं, जबकि हंपी ने काफी अधिक समय लिया। एक समय पर दिव्या घड़ी में आठ मिनट आगे थीं। हंपी ड्रॉ करने की कोशिश में लगी रहीं, लेकिन अंततः दबाव में हार माननी पड़ी। 34 चालों के बाद 38 वर्षीय हंपी को दिव्या ने मात दे दी।

टाईब्रेकर में कैसे खेला जाता है मैच?

टाई-ब्रेकर में 15-15 मिनट के दो गेम होंगे जिसमें हर चाल के बाद 10 सेकेंड का इजाफा होगा। स्कोर इसके बाद बराबर रहता तो दोनों खिलाड़ियों को 10-10 मिनट प्रति गेम के हिसाब से एक और सेट खेलने का मौका मिलता। इसमें भी हर चाल के बाद 10 सेकेंड का इजाफा होता। दोनों के बीच पहला रैपिड टाईब्रेकर भी ड्रॉ रहा। फिर दूसरे टाईब्रेकर में फैसला आया।मैच का परिणाम अगर दूसरे टाईब्रेकर में भी नहीं निकलता, तो पांच-पांच मिनट के दो और गेम होते और इसमें हर चाल के बाद तीन सेकेंड की बढ़ोतरी होती। इसके बाद एक गेम का मुकाबला होता जिसमें दोनों खिलाड़ियों को तीन मिनट मिलते और दो सेकंड का इजाफा होगा। यह तब तक चलता, जब तक कोई खिलाड़ी विजेता न बना जाए। हालांकि, इसकी नौबत नहीं आई। नागपुर की 19 वर्षीय दिव्या अब खिताब जीतकर ग्रैंडमास्टर बन चुकी हैं। अपने पहले विश्व कप खिताब से अभिभूत दिव्या अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सकीं। खिताब जीतते ही वह खुशी से रो पड़ीं। 19 वर्षीय दिव्या ने न केवल फिडे महिला शतरंज विश्व कप जीता है, बल्कि इस जीत के साथ ग्रैंडमास्टर का खिताब भी हासिल किया है। इस जीत के बाद भावुक हो गईं। दिव्या के लिए ये यादगार पल हैं। दिव्या कैंडिडेट्स शतरंज के लिए पहले ही क्वालिफाई कर चुकी हैं।

मशहूर धावक फौजा सिंह की सड़क दुर्घटना में मौत

1 अप्रैल को मनाया गया था 114वां जन्मदिन

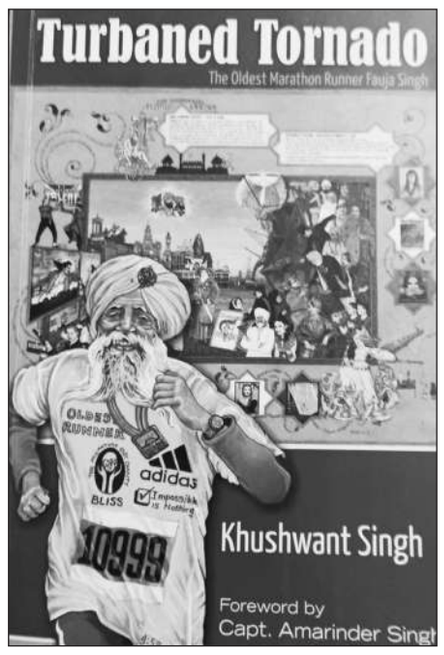

निज संवाददाता : दुनिया में 'टर्बन वाले तूफ़ान' के नाम से मशहूर फौजा सिंह का बीते 14 जुलाई को उनके गृहनगर बीस पिंड, पंजाब के पास एक वाहन की टक्कर से 114 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन से दुनियाभर के खेल प्रेमी शोक में डूब गए। यह प्रतिष्ठित मैराथन धावक, जिन्होंने उम्र के स्टीरियोटाइप को चुनौती देकर लाखों को प्रेरित किया, चिकित्सकीय प्रयासों के बावजूद दुर्घटना में हुई चोटों के कारण चल बसे। एक जीवन जो समय से पहले समाप्त हो गया सिंह, जिन्होंने इस साल 1 अप्रैल को 114वां जन्मदिन मनाया था, फिटनेस के प्रति अपने अटूट समर्पण के लिए जाने जाते थे। हालांकि उन्होंने 2013 में 102 वर्ष की आयु में प्रतिस्पर्धी दौड़ से संन्यास ले लिया था, लेकिन वे नियमित रूप से टहलकर अपने स्वास्थ्य को बनाए रखते थे। उनके बेटे, हरविंदर सिंह ने बताया कि फौजा का मानना था कि 'खुली हवा और मिट्टी ने उनके शरीर को जीवित रखा'।

दुखद रूप से, जालंधर-पठानकोट हाईवेपर उनकी नियमित शाम की सैर तब त्रासदी में बदल गई जब एक अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे उन्हें गंभीर रूप से सिर में चोट आई। वे शाम 7:30 बजे एक निजी अस्पताल में चल बसे।

कमज़ोर पैरों से विश्व रिकॉर्ड तक का सफर

1 अप्रैल, 1911को ब्रिटिश भारत में जन्मे फौजा बचपन में कमज़ोर पैरों से जूझते थे और पांच साल की उम्र तक ठीक से चल भी नहीं पाते थे। लगन और मेहनत से उन्होंने अपनी कमज़ोरी को ताकत में बदल दिया और अंततः दौड़ना शुरू किया। वयस्क होने के बाद एक लंबे अंतराल के बाद, 89 वर्ष की उम्र में वे एथलेटिक्स में लौटे, जब अपनी पत्नी और बेटे की मृत्यु के बाद उन्होंने लंबी दूरी की दौड़ में सांत्वना ढूंढी। उनके कोच, हरमिंदर सिंह ने याद किया कि फौजा ने शुरू में मैराथन को 26 किलोमीटर (26 मील की जगह) समझ लिया था, लेकिन उन्होंने नौ मैराथन पूरी कीं, जिनमें 100 वर्ष की उम्र में टोरंटो वॉटरफ्रंट मैराथन भी शामिल थी। इस उपलब्धि ने उन्हें इतिहास का सबसे उम्रदराज़ मैराथन धावक बना दिया, हालांकि जन्म रिकॉर्ड की कमी के कारण यह आधिकारिक तौर पर दर्ज नहीं हो सका।

प्रेरणा की विरासत

फौजा की उपलब्धियां खेलों से कहीं आगे थीं। वे दृढ़ता के वैश्विक प्रतीक बन गए और मुहम्मद अली और डेविड बेकहम के साथ एडिडास के 'इम्पॉसिबल इज़ नथिंग' अभियान में भी शामिल हुए। उनका शाकाहारी आहार, शराब से परहेज़ और अनुशासित दिनचर्या रोटी, दाल और अदरक वाली चाय उनकी दीर्घायु के रहस्य थे। दुनिया भर से श्रद्धांजलियां आईं, जिनमें पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने उन्हें 'दृढ़ता का प्रतीक' बताया, जबकि उनके जीवनीकार खुशवंत सिंह ने 'पगड़ी वाले तूफ़ान' के जाने पर शोक व्यक्त किया। अंतिम विदाई फौजा के रनिंग क्लब, सिख्स इन द सिटी ने उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए इलफ़र्ड में एक स्मारक क्लबहाउस बनाने की योजना की घोषणा की, जहां उन्होंने प्रशिक्षण लिया था। फिटनेस और सकारात्मकता को बढ़ावा देने की उनकी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए दान भी एकत्र किए जा रहे हैं। हालांकि फौजा ने एक बार 150 साल तक जीने की इच्छा जताई थी, लेकिन उनका 114 वर्ष का जीवन दृढ़ संकल्प की शक्ति का प्रमाण था। जैसा कि वे अक्सर कहते थे-'मैराथन के पहले 20 मील मुश्किल नहीं होते। बाकी के छह मील में मैं भगवान से बात करते हुए दौड़ता हूं।' उनकी असाधारण यात्रा भले ही समाप्त हो गई हो, लेकिन उनकी भावना आगे बढ़ती रहेगी।

'किसिंग कपल : तस्वीर में छुपा गहरा संदेश

शुभ्रांशु राय

कनाडा के वैंकूवर में, बोस्टन ब्रुइन्स और वैंकूवर कैनक्स के बीच नेशनल हॉकी लीग के फाइनल मैच की अंतिम सीटी बजी। वैंकूवर कैनक्स हार गया। बस! शुरू हो गई मारपीट! स्टेडियम के दर्शकों से आगे बढ़कर, यह झगड़ा पूरे वैंकूवर डाउनटाउन में फैल गया! क्या दंगा था वो! 15 जून, 2011 की रात को हुए इस दंगा को आज पूरी दुनिया स्टैनली कप दंगा के नाम से जानती है। लेकिन इस दंगा को एक आइकॉनिक पहचान मिली एक तस्वीर की बदौलत। जिस तस्वीर का नाम है किसिंग कपल। चुंबन में लीन यह जोड़ा। शहर भर में दंगा चल रहा था, तभी चलते-भागते स्काईट्रेन स्टेशन के पास पहुंचते ही युवती एलेक्जेंड्रा थॉमस लड़खड़ाकर गिर पड़ीं! वह सड़क पार कर रही थीं, और उनसे कुछ ही दूरी पर थे उनके प्रेमी स्कॉट जोन्स। चारों तरफ से, एलेक्जेंड्रा की ओर कई दंगाई और पुलिस की उठी हुई लाठियां बढ़ने लगीं! यह दृश्य देखकर, स्कॉट पूरी ताकत से उधर भागे। दूसरों से पहले पहुंचकर, गिरी हुई एलेक्जेंड्रा के ऊपर लेट गए, अपनी छाती फैलाकर, उल्टे। तभी, पुलिस की लाठियां उनकी पीठ पर पड़ने लगीं तेज चीखों के साथ; और दंगाइयों की भयानक हो-हल्ले और भागदौड़ में कान देना मुश्किल; वे पैरों तले कुचलते हुए आगे बढ़ रहे थे! मानो मौत का माहौल! फिर भी, प्रेयसी को छोड़कर नहीं उठे स्कॉट। इस प्रेमपूर्ण दृश्य की मोहकता से, पुलिस और लाठियां नहीं चला पाई; रुक गई; और दोनों को घेरकर पुलिस के रुके हुए खड़े होने को देखकर, आसपास के उग्र दंगाइयों ने भी इस जोड़े पर हमला करने का उत्साह खो दिया। प्रेम का अलौकिक जादुई प्रभाव! फिर, जब पुलिसकर्मी उनके पास से दंगाइयों को भगाने में व्यस्त हो गए, ठीक उसी समय नीचे लेटी हुई एलेक्जेंड्रा ने स्कॉट की गर्दन को जोर से अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। फिर, विश्वविख्यात वह चुंबन! 'याद रखूंगा प्रियतम...' इस अचानक चुंबन से स्कॉट पहले तो हैरान हुए, फिर जल्दी ही खुद को संभाल लिया। वे भी गहरे चुंबन की माया में डूब गए; वे दोनों। फोटोग्राफर रिचर्ड लैम ने यह तस्वीर खींच ली। इस तस्वीर के लिए उन्हें पुरस्कार मिल गया। लेकिन, इस तस्वीर का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है? वह कुछ और नहीं, बल्कि आज भी एलेक्जेंड्रा और स्कॉट का एक-दूसरे को न छोड़ना। स्कॉट जोन्स और एलेक्जेंड्रा थॉमस अब ऑस्ट्रेलिया में हैं, साथ-साथ, सुख-दुख में एकाकार। और, दुनिया के किसी भी कोने में दंगा-फसाद के समय, उनकी यह तस्वीर प्रेम फैलाने के लिए विभिन्न मीडिया में इस्तेमाल होती रहती है।

मनोरंजन

सिनेमा का वह सितारा जो अधूरी मोहब्बत के गम में हार गया जिंदगी

गुरुदत्त 100 वर्ष
जन्म-9 जुलाई 1925
मृत्यु-10 अक्टूबर 1964

निज संवाददाता : महान अभिनेता व फिल्मकार गुरुदत्त का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। बीते 9 जुलाई को पूरे देश में उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई। बड़ी बात यह थी कि उनकी उल्लेखनीय सिनेमाई विरासत का जश्न मनाने में दुःख भी शामिल है। दुःख उन अनेक व्यक्तिगत त्रासदियों का है, जो उनके छोटे से जीवन में घटित हुईं, जिसकी परिणति 1964 में मात्र 39 वर्ष की आयु में उनकी असामयिक मृत्यु के रूप में हुई। प्यासा, साहब, बीवी और गुलाम, चौदहवीं का चांद जैसी बेमिसाल फिल्में देने वाले गुरुदत्त उस वक्त दिवालिया हो गए जब कागज के फूल फ्लॉप हो गई। एक ओर जहां वो वहीदा रहमान को नहीं अपना पाए तो वहीं दूसरी ओर फिल्म में नुक्सान की वजह से गुरुदत्त बिल्कुल टूट चुके थे और उन्होंने 2 बार आत्महत्या की कोशिश की थी लेकिन तीसरी बार उनकी जान चली गई। 39 साल की उम्र में गुरु दत्त अपने बेडरूम में मृत पाए गए। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने पहले खूब शराब पी और उसके बाद ढेर सारी नींद की गोलियां खा ली थीं। कई प्रशंसक आज भी सोचते हैं कि अगर गुरुदत्त लंबे समय तक जीवित रहते, तो सिनेमा की कितनी ऊँचाइयों को छू पाते। दो दशक से भी कम समय के करियर के बावजूद, भारतीय सिनेमा में उनका योगदान अमिट था। उन्होंने हमें 'साहिब बीबी और गुलाम', 'चौदहवीं का चाँद', 'मिस्टर एंड मिसेज 55' और 'आर पार' जैसी अविस्मरणीय फ़िल्में दीं। उन्होंने 'सांझ और सवेरा' सहित कई अन्य फ़िल्मों में भी अभिनय किया। फिर भी, 'प्यासा' और 'कागज़ के फूल' उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियाँ हैं, खासकर 'प्यासा', जिसने लगातार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा प्राप्त की है और भारत और विदेशों में, यहाँ तक कि पश्चिम में भी, नए दर्शकों को आकर्षित किया है। 'प्यासा' एक संवेदनशील कवि की कहानी है जो न केवल पहचान के लिए, बल्कि भौतिकवाद और संवेदनहीनता से प्रेरित इस दुनिया में गहरी समझ के लिए भी तरस रहा है। जहाँ कई कलाकार और लेखक पहचान पाने के लिए संघर्ष करते हैं, वहीं 'प्यासा' एक अधिक अस्तित्वगत प्यास, अर्थ, करुणा और सत्य की लालसा को चित्रित करके इससे भी आगे निकल जाती है। पहचान, धन और प्रसिद्धि प्राप्त होने पर भी, 'प्यासा' का कवि आध्यात्मिक रूप से अधूरा रहता है। आज की दुनिया में, जहाँ आदर्शवाद का अक्सर मज़ाक उड़ाया जाता है और भौतिक सफलता को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाता है। 'प्यासा' आज भी विचारशील दर्शकों के बीच अपनी जगह बनाए हुए है। यह उन सभी लोगों से बात करती है जो सपनों के प्रति उदासीन दुनिया में खुद को अलग-थलग महसूस करते हैं और यह सिनेमा की एक ऐसी उत्कृष्ट कृति बनी हुई है जो मानवीय लालसा और कलात्मक विद्रोह के मर्म को छूती है। गुरुदत्त ने अपने शुरुआती जीवन के कठिन दौर में 'प्यासा' की कहानी लिखी थी। अपनी मृत्यु से पहले, वे एक आदर्शवादी पत्रकार पर आधारित एक फिल्म बना रहे थे और 'ओलिवर ट्विस्ट' के सिनेमाई रूपांतरण पर भी विचार कर रहे थे। एक निर्माता, निर्देशक और अभिनेता के रूप में अपनी प्रतिभा के अलावा, गुरुदत्त ने एक असाधारण प्रतिभाशाली रचनात्मक टीम तैयार करके हिंदी सिनेमा के परिदृश्य को नया आकार देने में भी मदद की। उन्होंने कई प्रमुख कलाकारों, जिनमें वहीदा रहमान सबसे प्रमुख हैं, के करियर को गति दी और कम उम्र में ही एक सफल फिल्म कंपनी की स्थापना की बिना किसी उद्योग जगत के समर्थन के, यह एक असाधारण उपलब्धि थी।

रणवीर सिंह, श्रीलीला और बॉबी देओल की मेगा फिल्म का टाइटल जल्द होगा रिलीज

मुंबई : रणवीर सिंह, श्रीलीला और बॉबी देओल के एक साथ आने की खबर ने वाकई सबको चौंका दिया है। ये तिकड़ी पहली बार किसी प्रोजेक्ट में साथ नजर आने वाली है, और फैंस में इसे लेकर जबरदस्त एक्साइटमेंट है। अब सबकी नजरें इस बात पर टिकी हैं कि आखिर फिल्म का टाइटल क्या होगा। दिलचस्प बात ये है कि इसका ऐलान जल्द ही हो सकता है। एक इंडिपेंडेंट इंडस्ट्री सोर्स के मुताबिक, 'रणवीर सिंह, श्रीलीला और बॉबी देओल का ये कोलैबोरेशन हर अपडेट के साथ और भी ज्यादा धमाकेदार होता जा रहा है। फैंस के लिए ये किसी ट्रीट से कम नहीं होगा, क्योंकि आने वाले हफ्ते में फिल्म का टाइटल रिवील किया जाएगा और साथ ही इसका फर्स्ट लुक भी सामने आएगा।'

इस मेगा प्रोजेक्ट को लेकर शुरू से ही जबरदस्त बज बना हुआ है। जब रणवीर सिंह को मेहबूब स्टूडियो में देखा गया, फिर उसके बाद बॉबी देओल और श्रीलीला भी वहीं नजर आए, तो फैंस की उत्सुकता और बढ़ गई। टाइटल से लेकर बाकी डीटेल्स तक हर कोई बेसब्री से इंतजार कर रहा है कि इन तीनों स्टार्स को साथ में स्क्रीन पर देखना कैसा धमाका करेगा। ये वाकई एक खास अनुभव होने वाला है जब ये तीनों दमदार परफॉर्मर एक साथ स्क्रीन शेयर करेंगे। रणवीर सिंह की जबरदस्त एनर्जी और वैर्सेटिलिटी, श्रीलीला का शानदार चार्म और बॉबी देओल की दबदबा बनाने वाली स्क्रीन प्रेजेंस, इन सबके साथ ये प्रोजेक्ट साल के सबसे बड़े सिनेमाई धमाकों में से एक बनता जा रहा है।

फैंस के लिए यह किसी ट्रीट से कम नहीं होगा

दिलचस्प बात ये है कि इसका ऐलान जल्द ही हो सकता है। एक इंडिपेंडेंट इंडस्ट्री सोर्स के मुताबिक, 'रणवीर सिंह, श्रीलीला और बॉबी देओल का ये कोलैबोरेशन हर अपडेट के साथ और भी धमाकेदार होता जा रहा।

'देव डी के बाद लोगों ने मुझे बदसूरत कहा'

मुंबई : कल्कि कोचलिन इस वक्त अपने एक इंटरव्यू की वजह से चर्चा में हैं। एक्ट्रेस ने हाल ही में ज़ूम को इंटरव्यू दिया है, जिसमें उन्होंने अपनी पहली फिल्म की रिलीज के बाद के एक्सपीरियंस पर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि कैसे 'देव डी' के लिए क्रिटिक्स से उन्हें सराहना मिली थी लेकिन उन्हें ऑनलाइन ट्रोलिंग और स्क्रूटनी का भी सामना करना पड़ा। कल्कि इंटरव्यू में ये भी बताती हैं कि कैसे देव डी के बाद एक पत्रकार ने उन्हें रूसी मॉडल कह दिया था और इससे उन्हें बहुत ठेस पहुंची थी। वो यह भी बताती हैं कि फिल्म के प्रभाव के बावजूद, उन्हें उसके बाद दो साल तक कोई फिल्म काम नहीं मिला। वो कहती हैं- 'देव डी के बाद, मुझे अपने लुक के लिए इतनी आलोचना का सामना करना पड़ा कि मैं बदसूरत महसूस करने लगी थी। मैं मिरर में देखती थी और मुझे पता था कि मैं बदसूरत नहीं हूं। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूं तो मुझे लगता है, मैं अपने पिक पर थी, मैं कितनी सुंदर दिखती थी। मैंने एजॉय क्यों नहीं किया? लेकिन कई बार ऐसा भी होता था जब मैं खुद को देखती और खुद को बहुत बदसूरत महसूस करती। सिर्फ इस बात से कि किसी ने मेरे दांतों के बारे में कुछ टिप्पणी कर दी या कुछ ऐसा कह दिया कि तुम एक एक्टर कैसे हो सकते हो?

इसी इंटरव्यू में उन्होंने करियर की शुरुआती दिनों में एक पत्रकार की ओर से की गई अनुचित कमेंट को भी याद किया। कल्कि बताती हैं- 'किसी ने लिखा था कि मैं एक रूसी मॉडल की तरह हूं, जिसने आकर यह फिल्म की है। मैं इससे बहुत ज्यादा ऑफेंड हुई थी। सच में? आपको कैसे पता नहीं चला कि मेरा जन्म ऑरोविल में हुआ था? कृपया अपनी रिसर्च जरूर करें। तब मुझे एहसास हुआ कि बहुत से पत्रकार रिसर्च नहीं करते।'बता दें कि कल्कि ये भी बात चुकी हैं उन्हें दो बार कास्टिंग काउच का सामना करना पड़ा है। इंडस्ट्री में उन्हें उनके लुक की वजह से बुरा फील कराया जाता था। एक बार एक प्रोड्यूसर ने उन्हें बोटॉक्स लेने की सलाह दी थी और ये सारी बातें ही बहुत कैजुअल तरीके से बोल दी जाती थीं। एक्ट्रेस की वर्कफ्रंट की बात करें तो उन्हें डायरेक्टर विष्णुवर्धन की तमिल रोमांटिक एक्शन थ्रिलर 'नेसिप्पाया' में देखा गया था।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय :** 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइव रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय :** 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक :** अजय कुमार मोहता, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)